मोतीदाइ

गहिल माताक भगतिन — छह दिनक मातृत्वक करुण गाथा

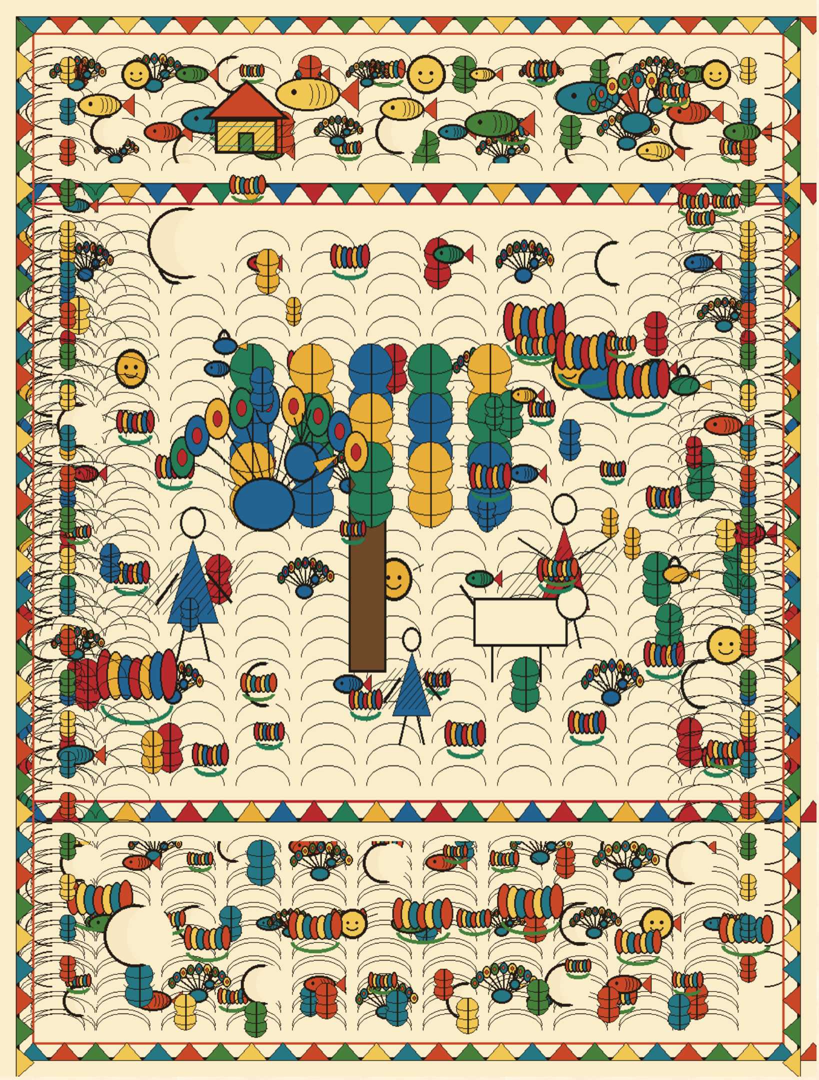

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम

मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : उजैनी गाम

मिथिलामे एकटा गाम अछि — उजैनी। ओतय गहिल माताक गहमर अछि, आ गहमरक खिस्सामे एकटा नाम अछि जे सुनिते आँखि भीजि जाइत अछि — मोतीदाइ।

ई खिस्सा वरदानक थिक आ वेदनाक सेहो। ई खिस्सा कहैत अछि जे भक्ति की दिआ सकैत अछि — आ की नहि दिआ सकैत अछि; आ ई जे कखनो काल छह दिनक सुख जिनगी भरिक दुखक उत्तर बनि जाइत अछि।

अध्याय १ : गहिल माताक गाम

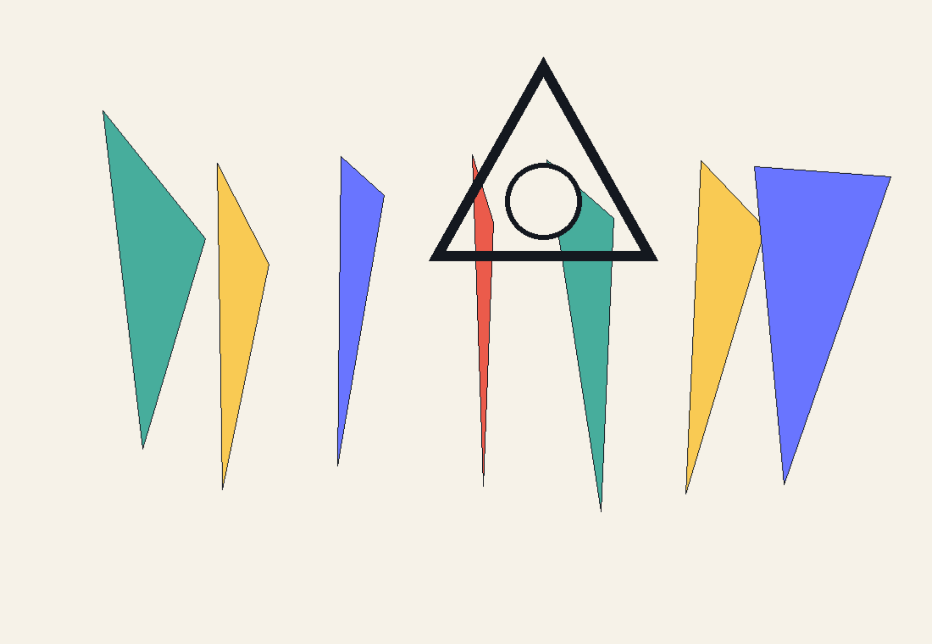

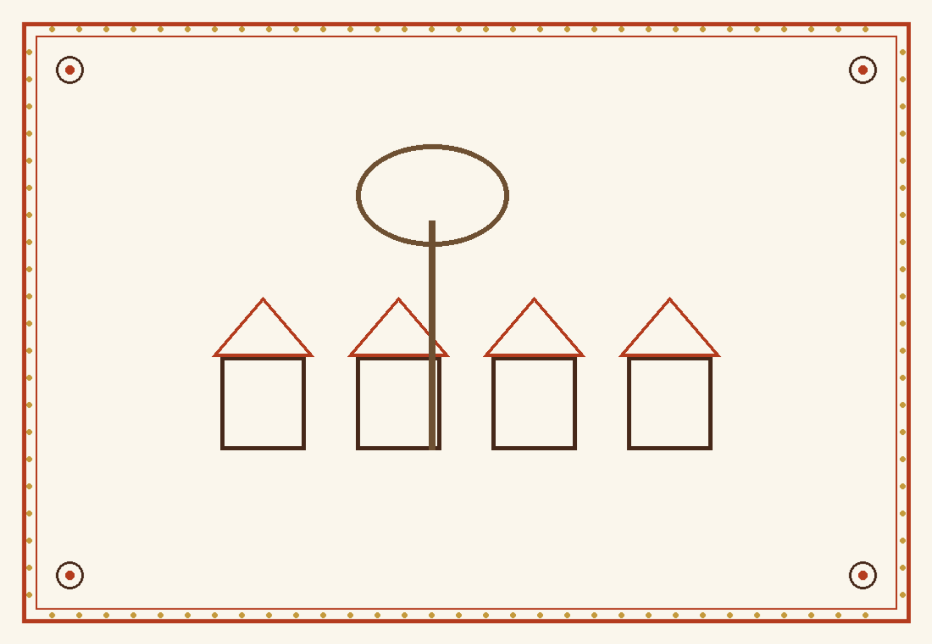

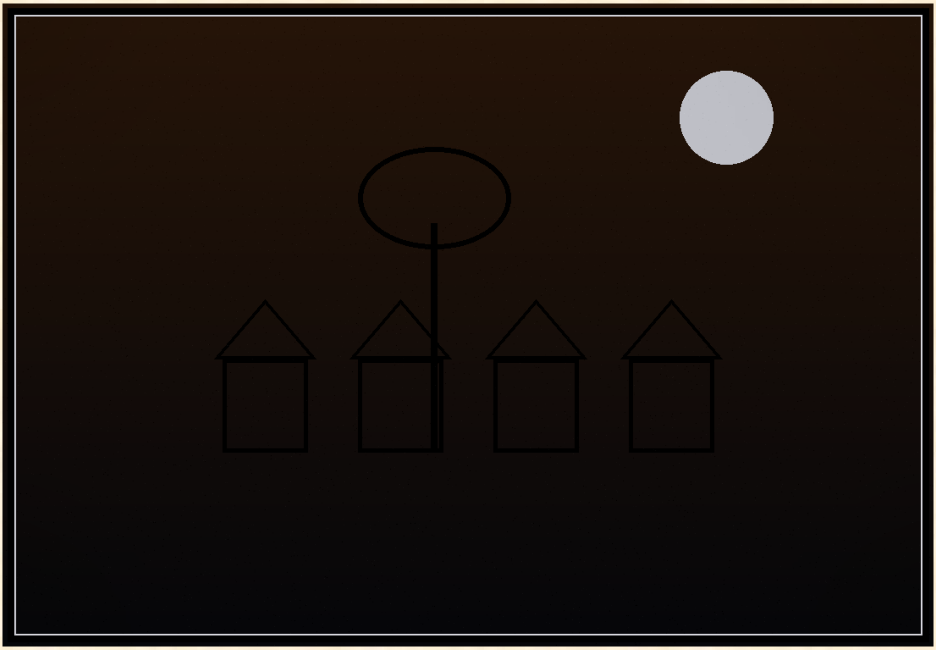

चित्र 1

उजैनी छोट गाम छल — मुदा ओकर पहिचान पैघ छल: गहिल माताक गहमर। माटिक पीड़ी, सिन्नुरसँ रंगल, नीमक गाछ तर। दूर-दूरसँ लोक ओतय माथ टेकए अबैत छल — पुत्र लेल, अन्न लेल, आरोग्य लेल।

गहिल माता उग्र नहि, ममतामयी देवी मानल जाइत छलीह। लोक कहए — 'माता ककरो खाली हाथ नहि घुरबैत छथिन्ह।' आ एहि विश्वासक सभसँ पैघ खाम्ह छलीह एकटा साधारण स्त्री — मोतीदाइ।

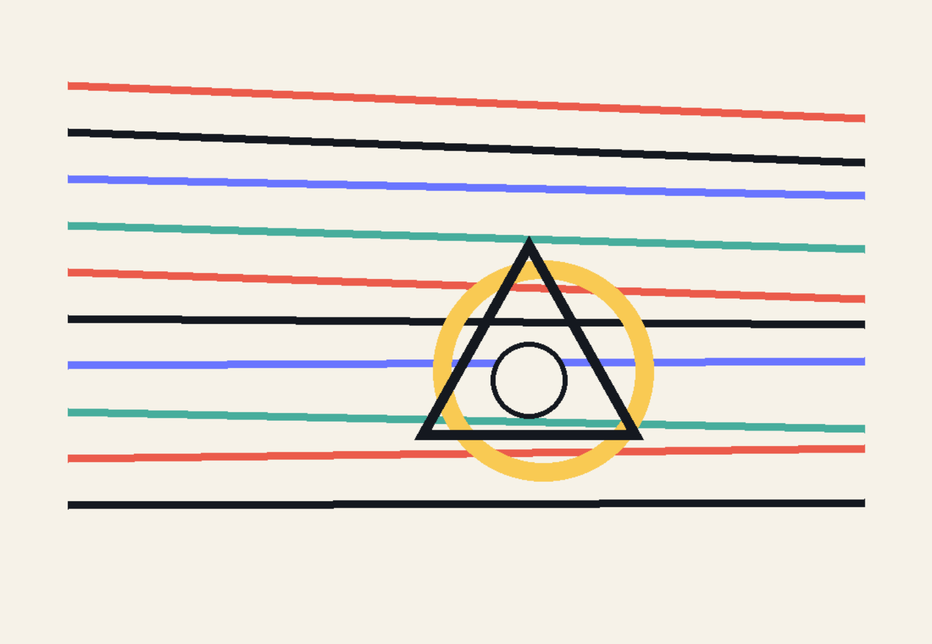

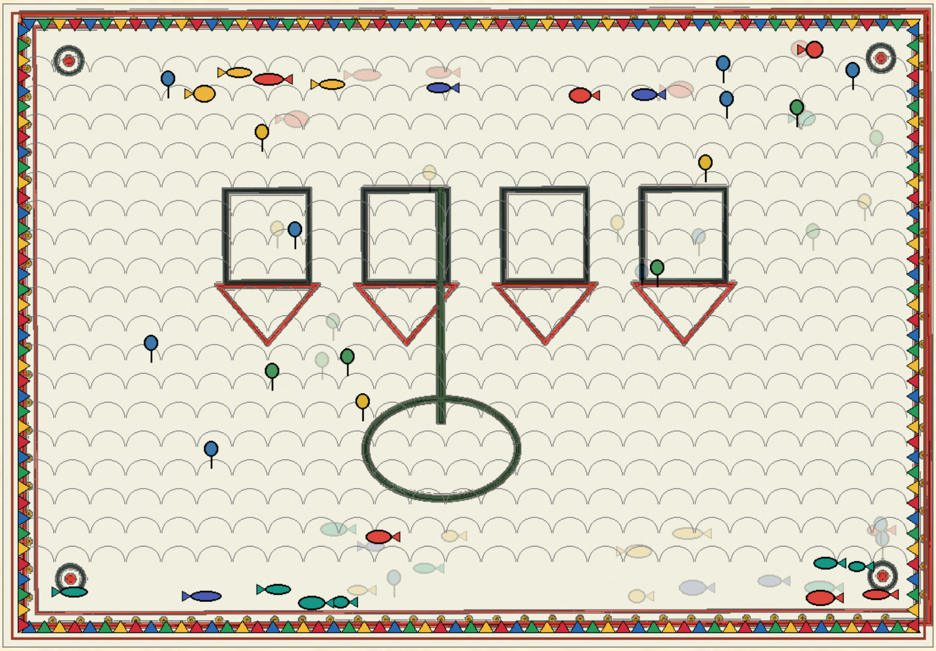

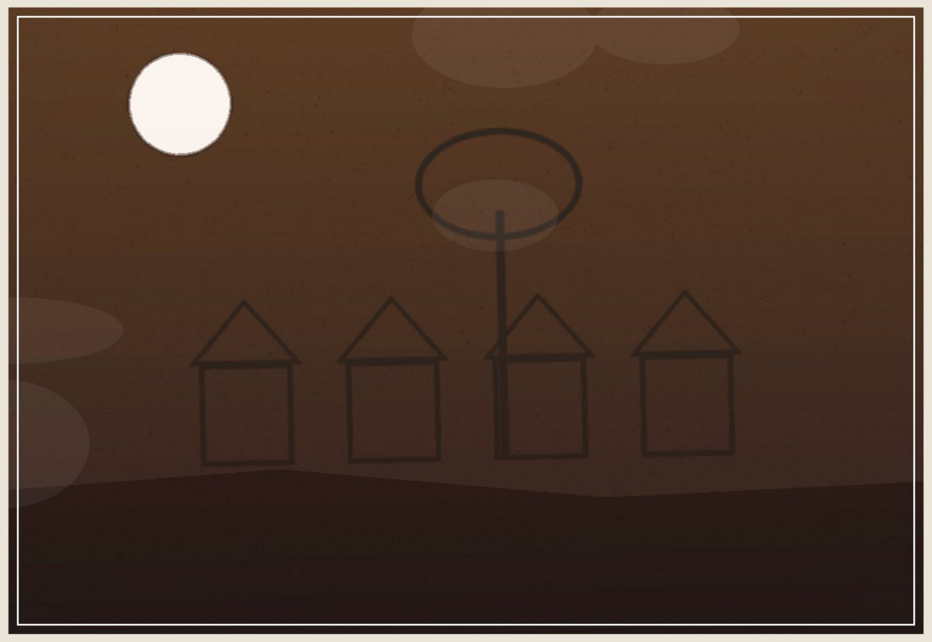

चित्र 2

गाममे टोले-टोल छल — गुअरटोली, रजकटोली, आ आनो। सभक अपन-अपन काज, अपन-अपन घाट। मुदा गहमरपर सभ एक छल — कमसँ कम एना बुझाइत छल। बुझाएब आ होएब — एहि दुनूक बीचक दूरी एहि खिस्सामे आगाँ चलि कऽ नापल जाएत।

नीमक गाछ तरक ओहि पीड़ीपर सभ भोर सभसँ पहिने जे दीप जरैत छल, से एक्कहि हाथक जराओल — मोतीदाइक हाथक।

अध्याय २ : भगतिन मोतीदाइ

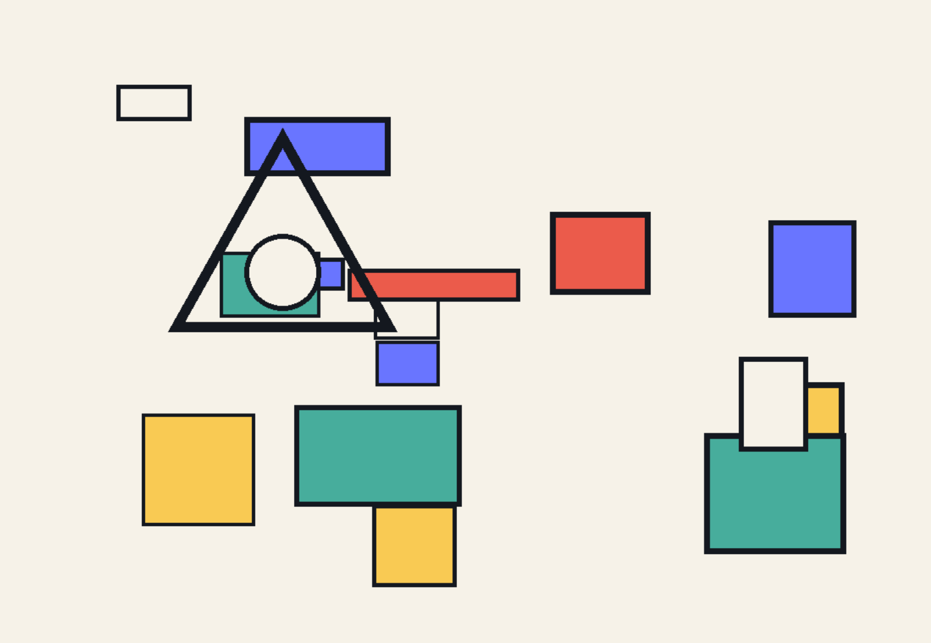

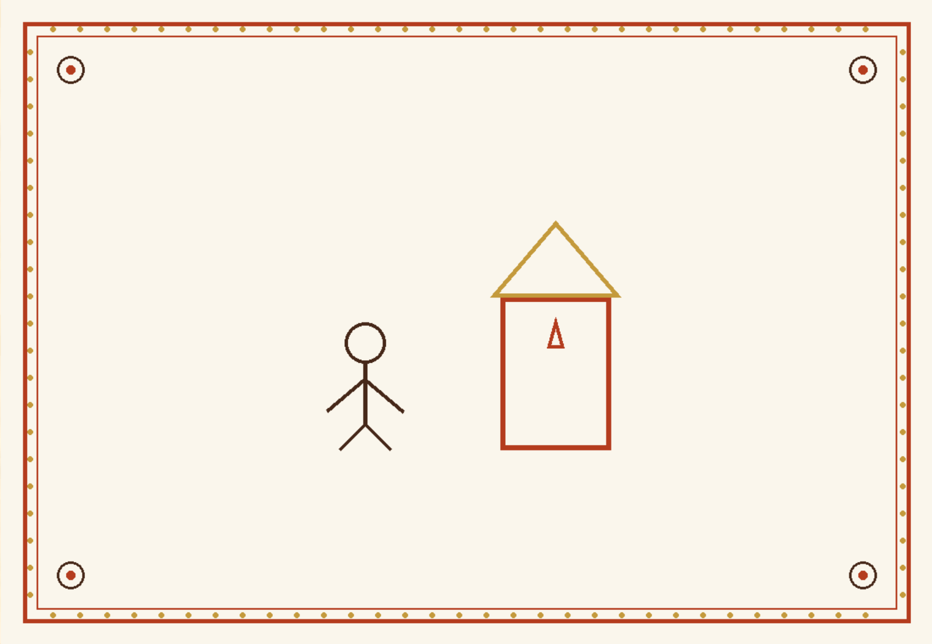

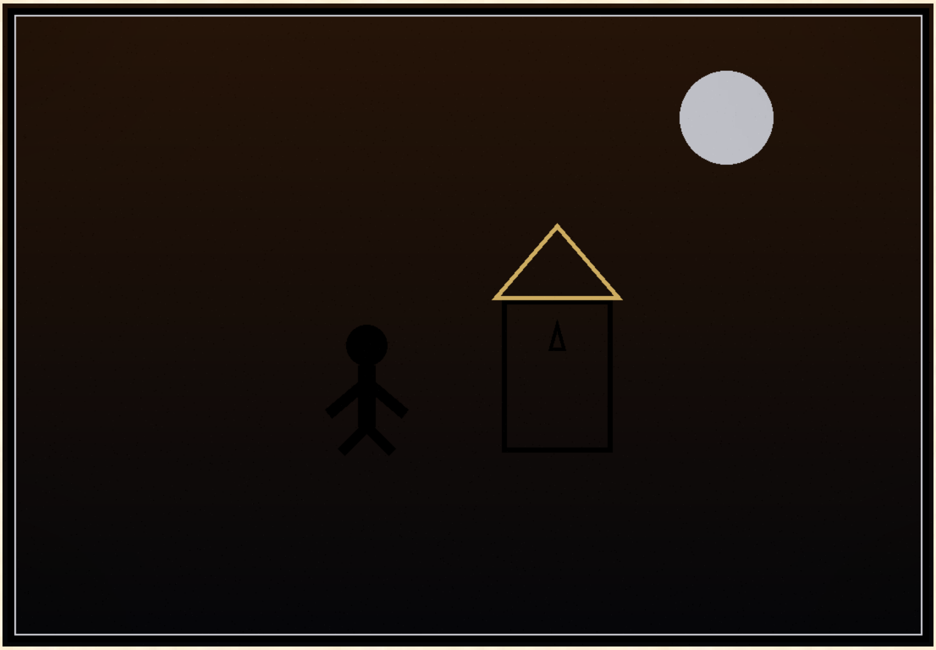

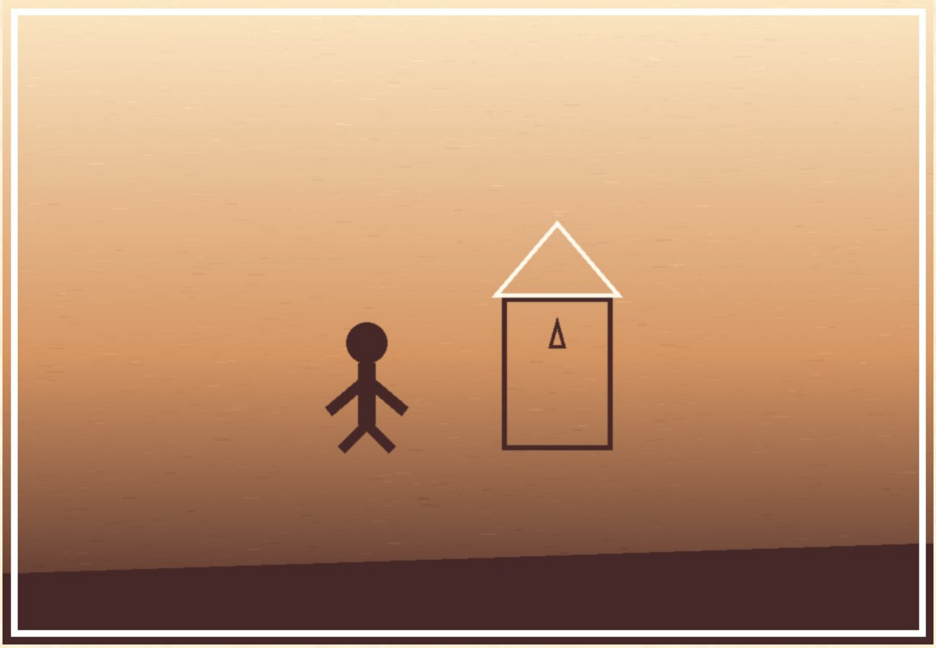

चित्र 3

मोतीदाइ जातिक रजक छलीह — कपड़ा खीचनिहारि। भोरे घाटपर कपड़ाक ढेरी, दुपहरमे सुखेनाइ, साँझमे घर-घर पहुँचेनाइ — देह लेल एतबे जिनगी छल। मुदा प्राण लेल? प्राण लेल छल गहिल माताक सेवा।

गहमरक बहारब, पीड़ीक लीपब, दीप-धूप, फूल-अक्षत — ई सभ मोतीदाइक नित्य-कर्म छल। लोक हुनका 'भगतिन' कहैत छल, आ ई उपाधि हुनका कोनो सिंहासनसँ पैघ लगैत छलनि।

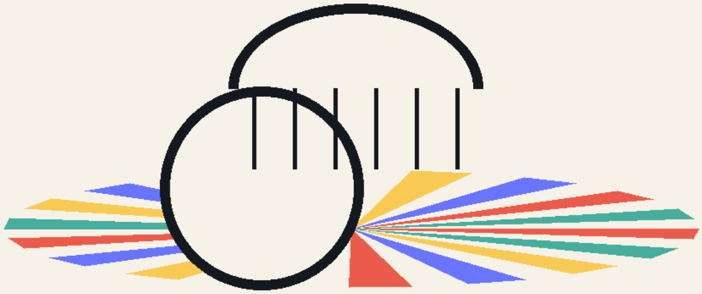

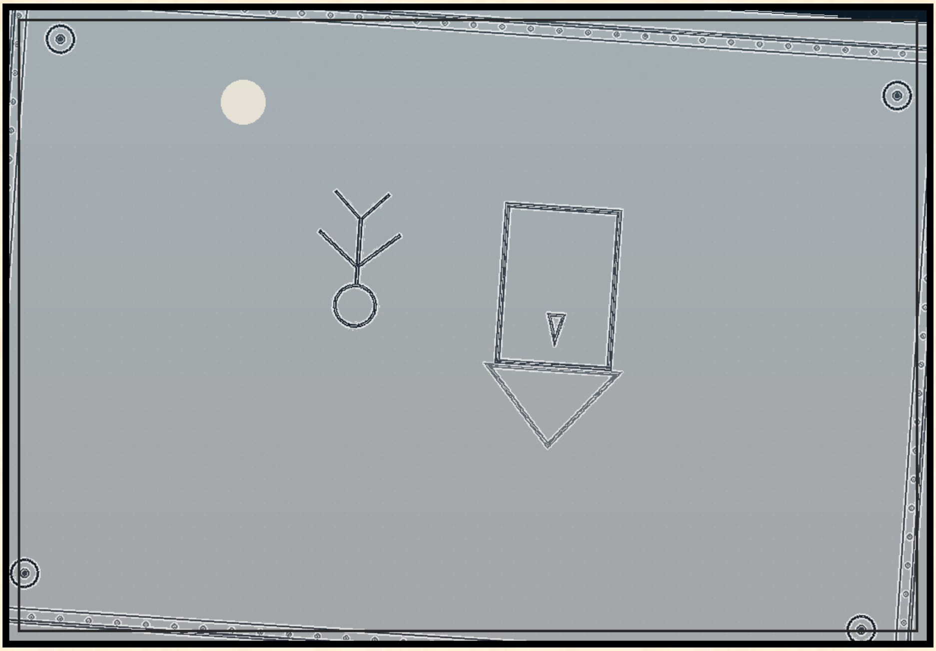

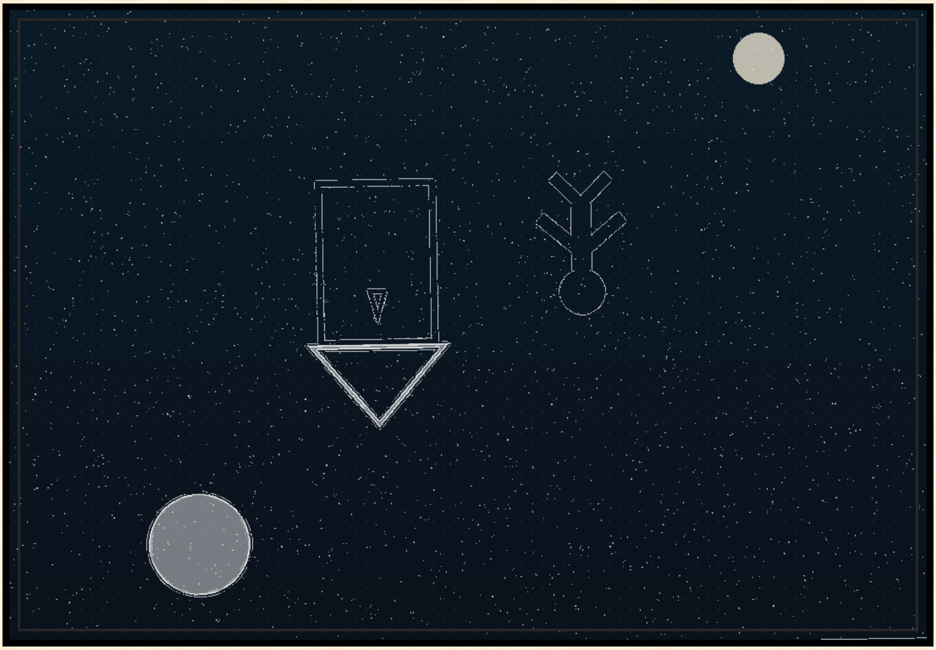

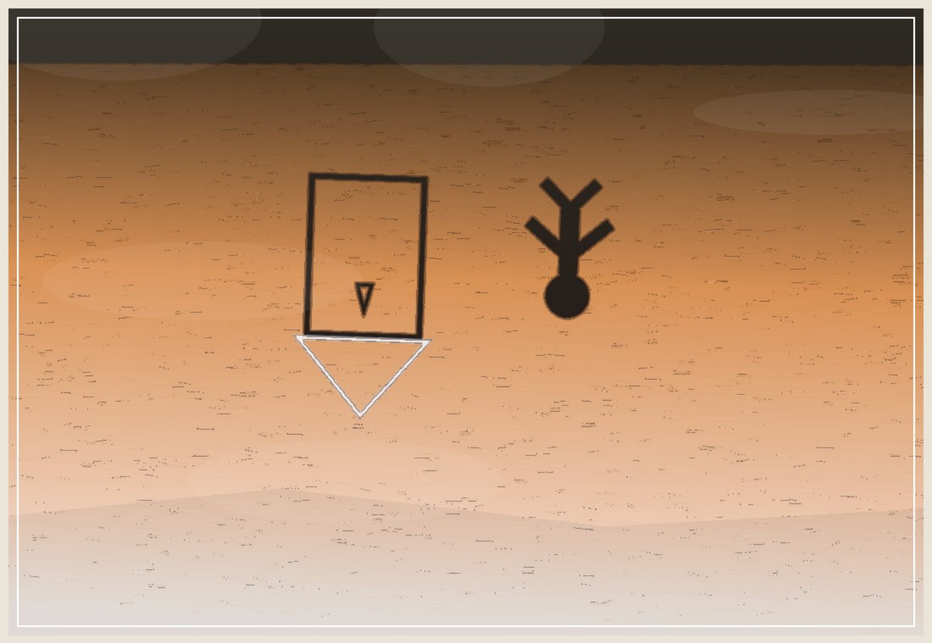

चित्र 4

मुदा भगतिनक अपन घरमे एकटा कोठरी खाली छल — कोरा। बियाहक बरखो बीति गेल, सन्तान नहि भेलनि। ओ दुख मोतीदाइ ककरोसँ नहि कहथि — कहितथि ककरा? माता त' सभटा देखिते छथिन्ह — ओ सोचथि, आ दीपक बाती ठीक कऽ दैथि।

गाममे मुदा दोसराक खाली कोरा गनबाक रेवाज पुरान छै। मोतीदाइक दुखकेँ गामक जीह नाम दऽ चुकल छल — आ ओ नाम एक दिन हुनका मुँहपर फेकल गेल।

अध्याय ३ : गोबर पाथैत साँझ

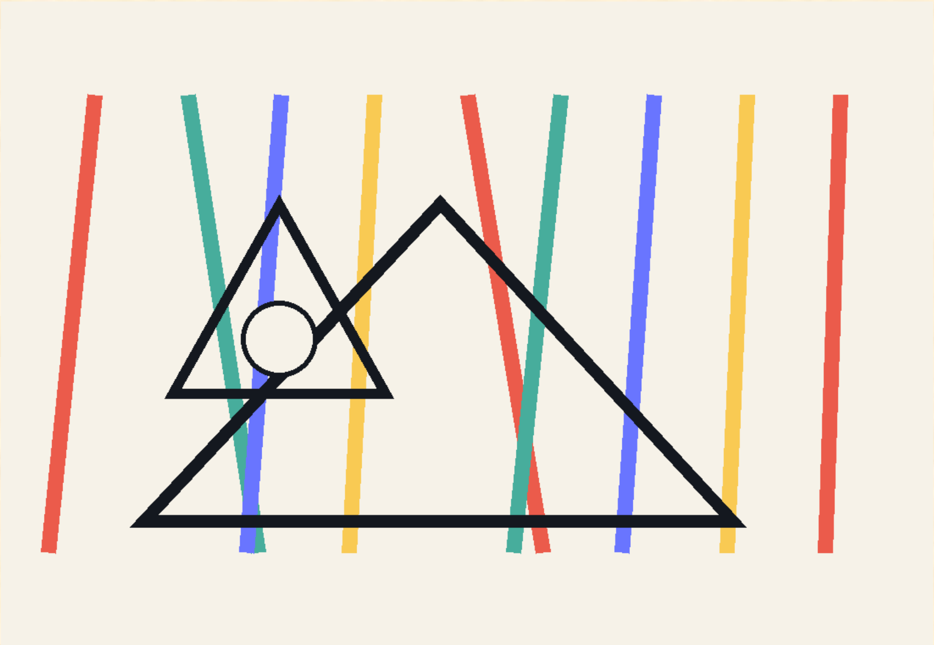

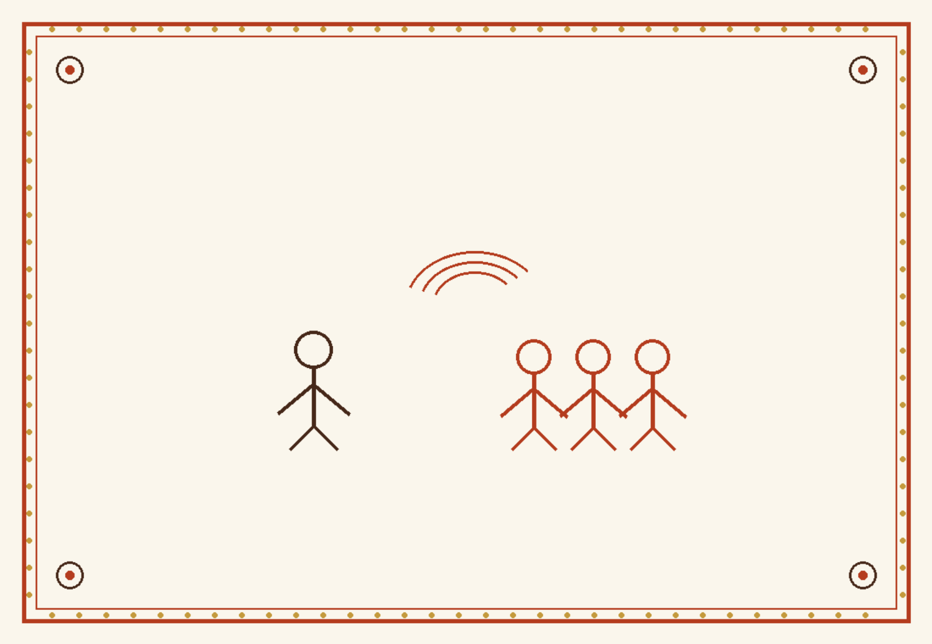

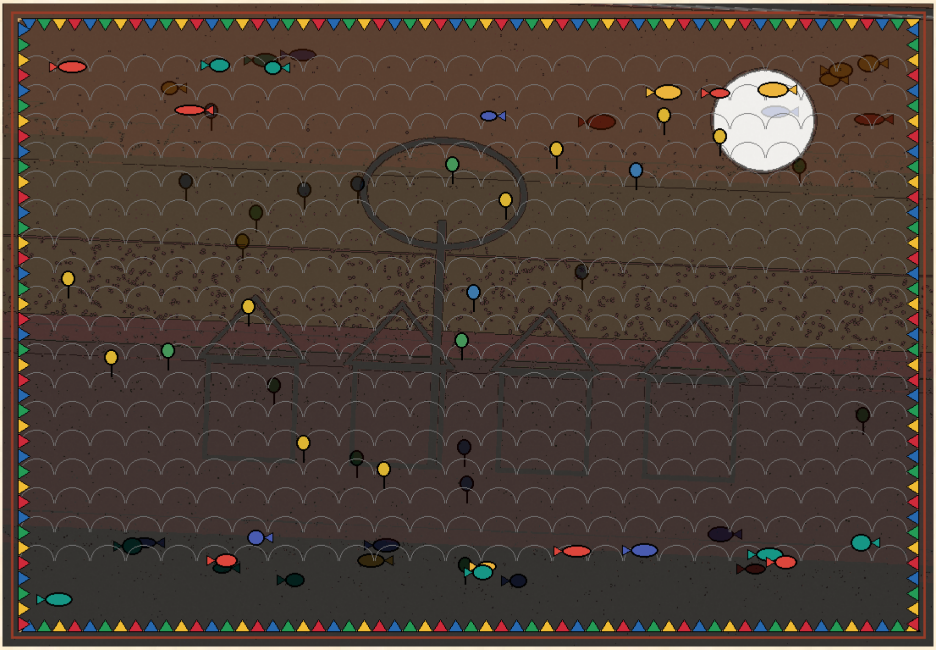

चित्र 5

एक दिनक गप। मोतीदाइ अपन बाड़ीमे गोबर पाथि रहल छलीह — साँझक बेर, हाथ सनल, माथ झुकल, काजमे लीन।

तखने गुअरटोलीक जनानी सभ ओम्हरसँ निकललि — माल-जाल हँकने। मोतीदाइकेँ देखिते हुनका सभक डेग रुकल, आ जीह चलल।

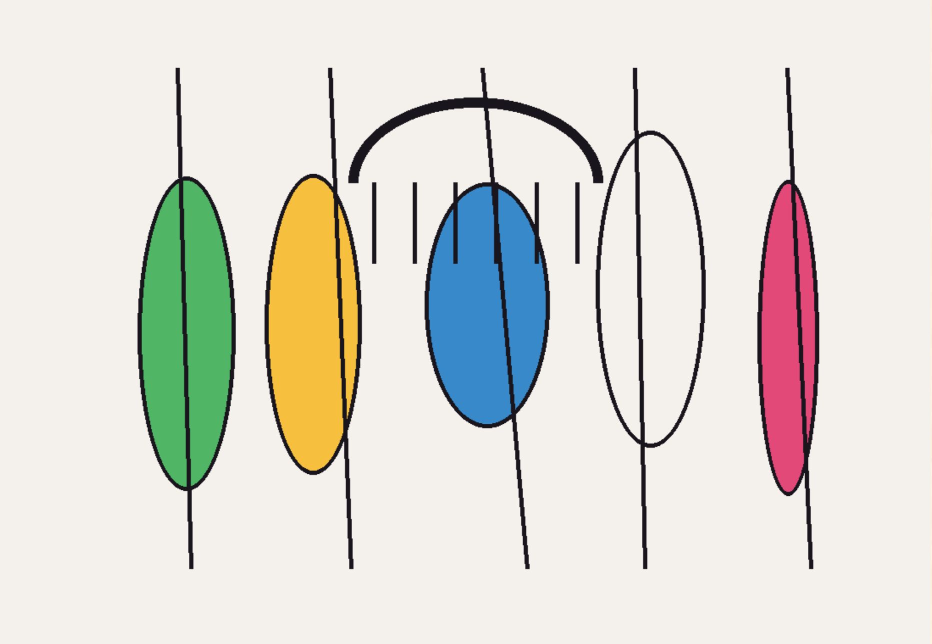

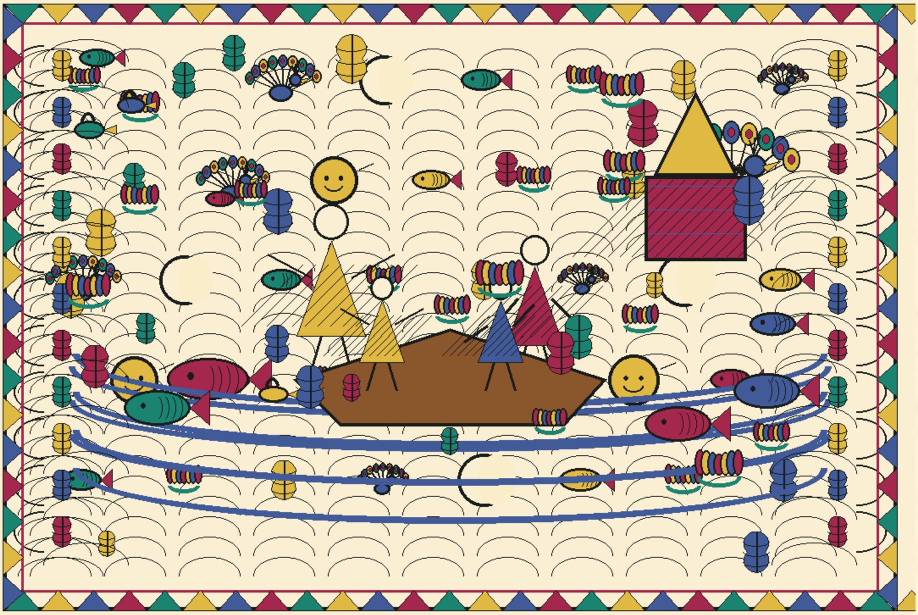

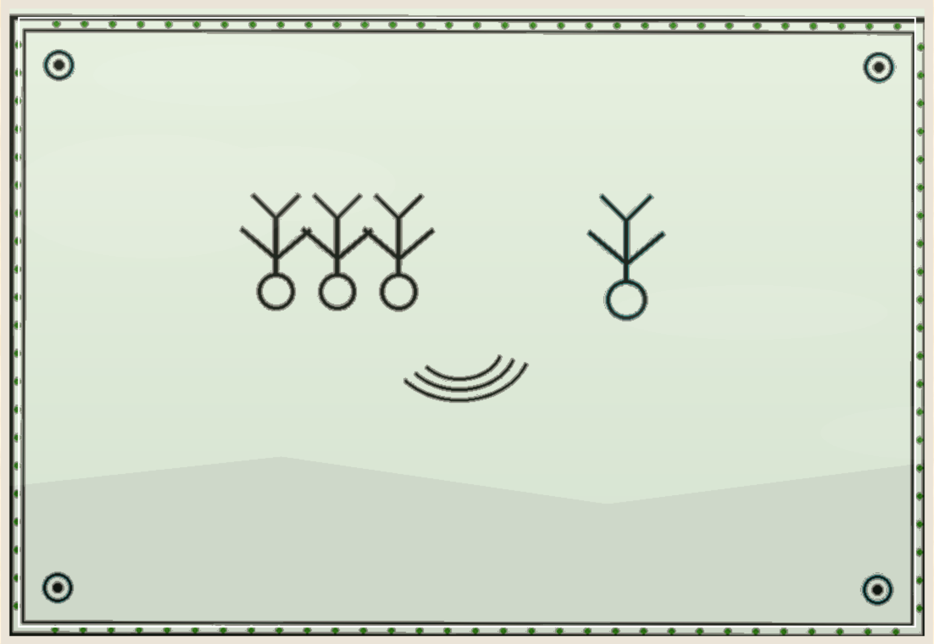

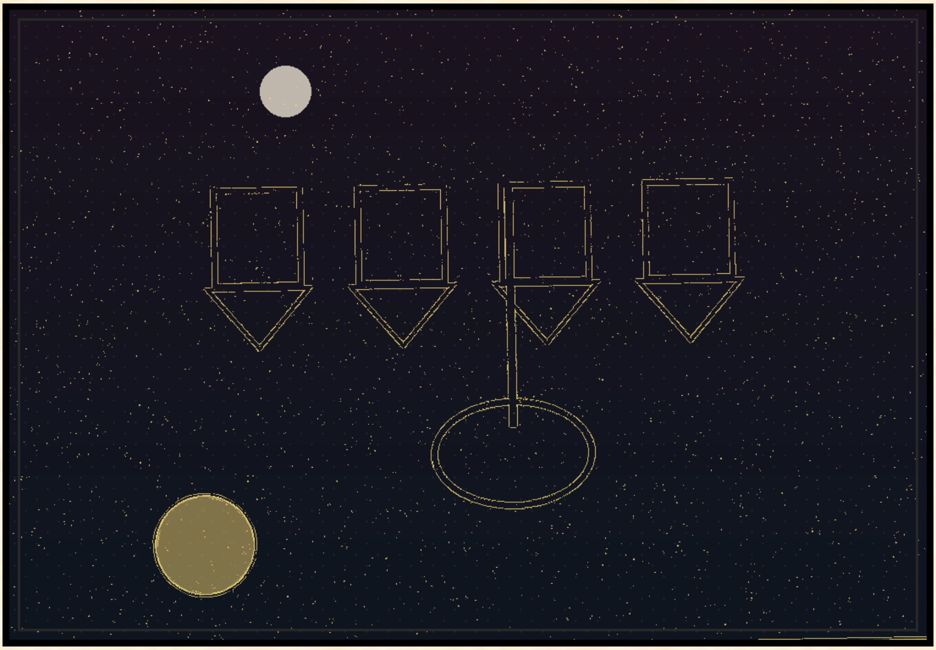

चित्र 6

'अपन माल-जाल भगाउ! नहि त' सभटा माल-जाल बिसखि जाएत, बाँझ भऽ जाएत — जेना ई मोतीदाइ अछि!'

शब्द — आ शब्दोमे ई शब्द। बाँझ। एतबे नहि — मोतीदाइक छाया धरि अशुभ ठहराओल गेल: जकरा देखने माल-जाल बिसखि जाएत! गोबरमे सनल हुनक हाथ ओतहि थम्हि गेल। जनानी सभ हँसैत आगाँ बढ़ि गेलि, आ पाछाँ रहि गेलीह मोतीदाइ — आ हुनक भीतर टूटैत किछु, जकर आवाज ककरो नहि सुनाएल।

अध्याय ४ : बाँझ शब्दक भार

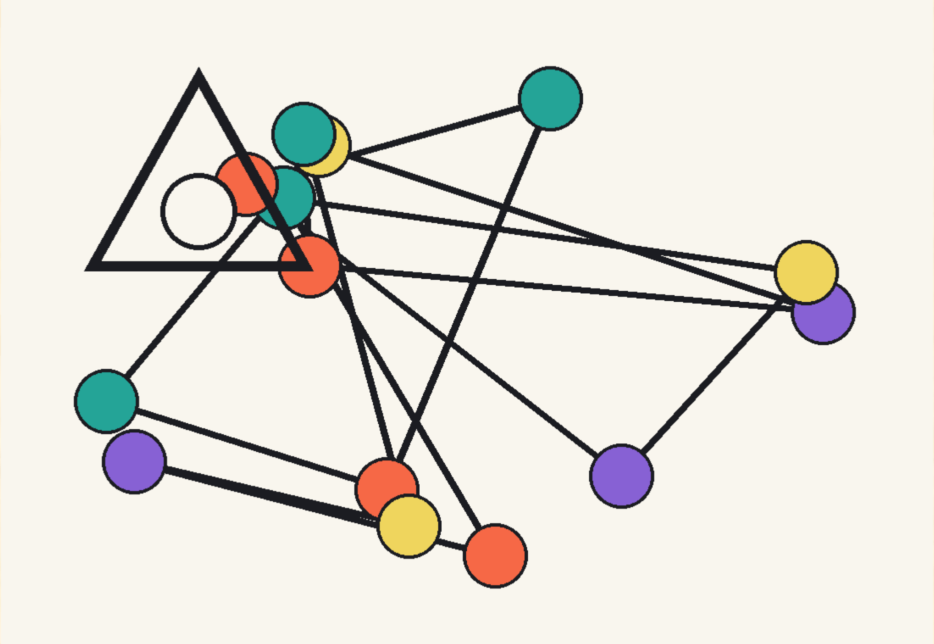

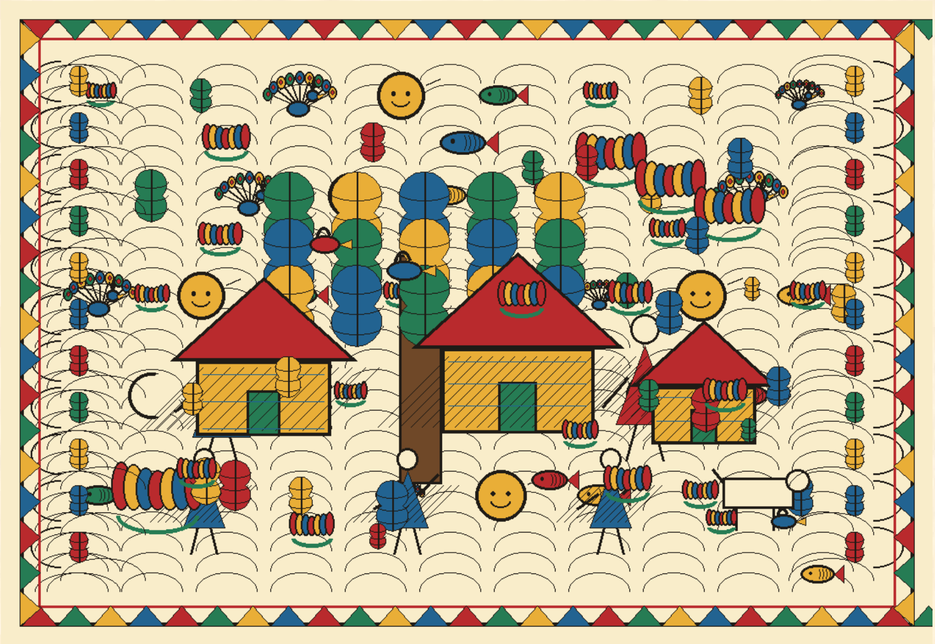

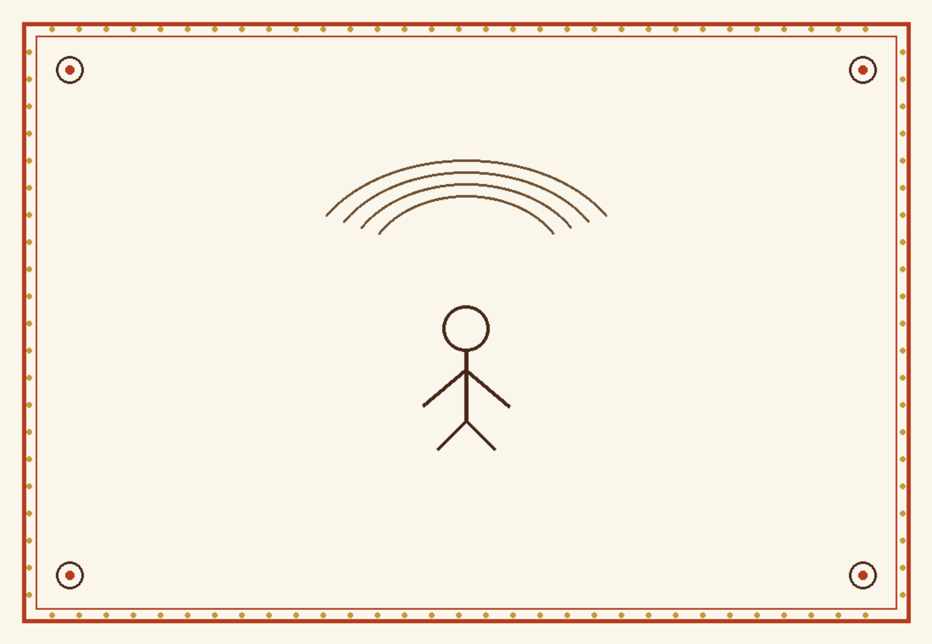

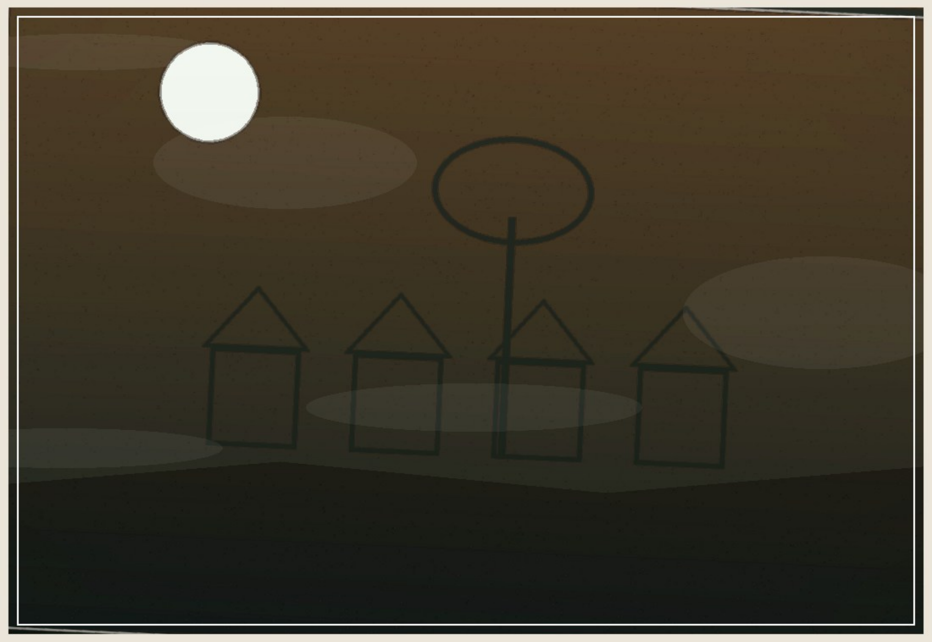

चित्र 7

मोतीदाइ दुखसँ भरि गेलीह। दुख नव नहि छल — नव छल ओकर सार्वजनिक घोषणा। एक बात अछि भीतरे-भीतर कानब, आ दोसर बात अछि गामक बाटपर अशुभ कहाएब।

ओहि राति हुनका निन्न नहि भेलनि। कानमे बेर-बेर वैह वाक्य बाजए — 'जेना ई मोतीदाइ अछि...' त' की हुनक भरि जिनगीक सेवाक यएह मोल? माताक पीड़ी लीपैत-लीपैत हाथक रेखा घसा गेल, आ रेखामे सन्तानक नाम तइयो नहि लिखाएल?

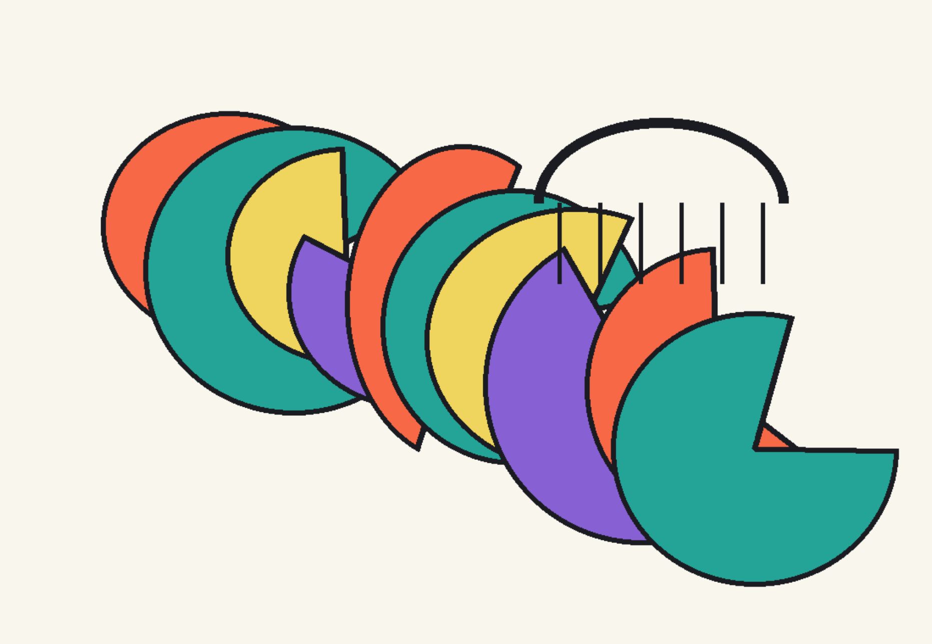

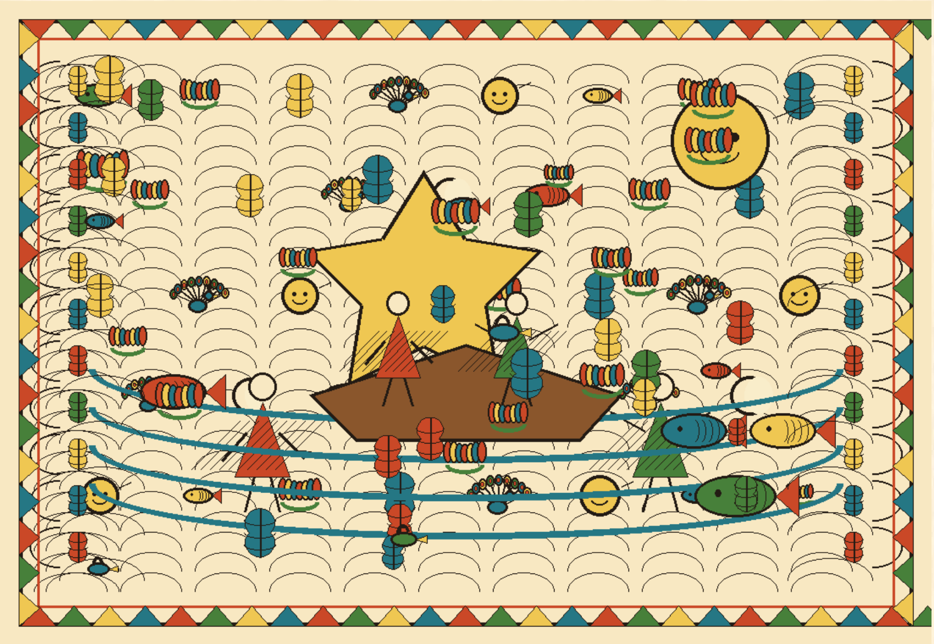

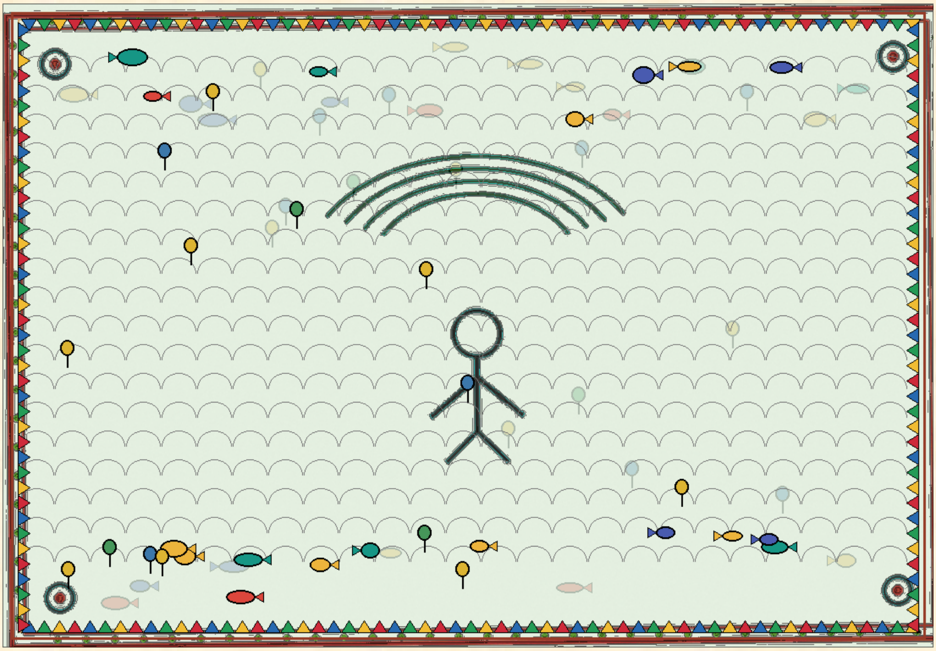

चित्र 8

भोर होइते ओ उठलीह — मुदा आइ घाट दिस नहि, गहमर दिस। आइ दीप-धूपक बेर नहि छल। आइ हिसाबक बेर छल — भक्त आ भगवतीक बीचक सोझ हिसाब।

जे स्त्री बरखोसँ खाली माँथ टेकैत छलि, से आइ पहिल बेर माँगए जा रहल छलि। आ भक्तिक खिस्साक सभ गवाह अछि — जहिया साँच भगत माँगपर उतरि अबैत अछि, तहिया देवतोकेँ उत्तर देबए पड़ैत छनि।

अध्याय ५ : पीड़ी खोदब

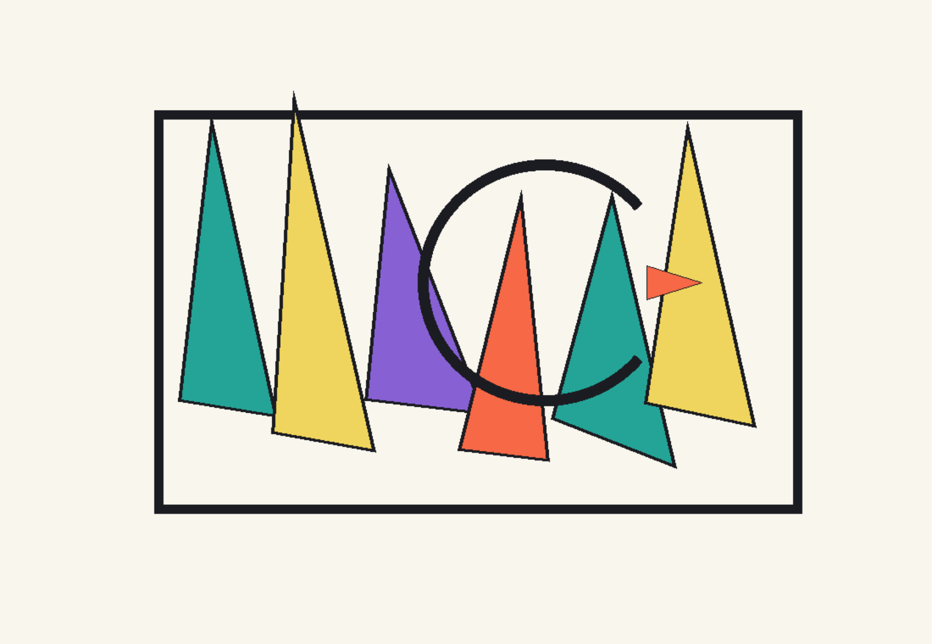

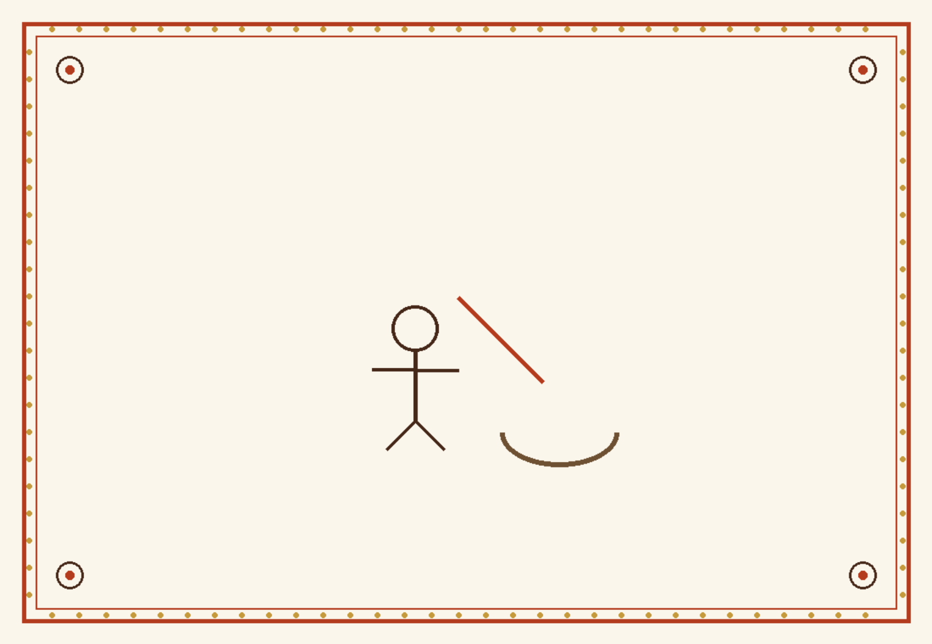

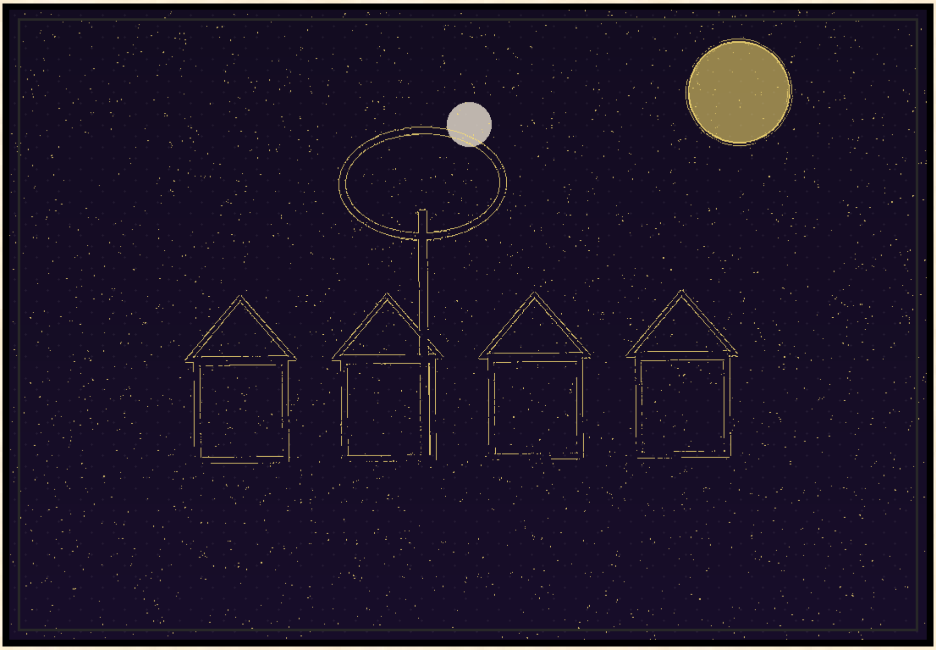

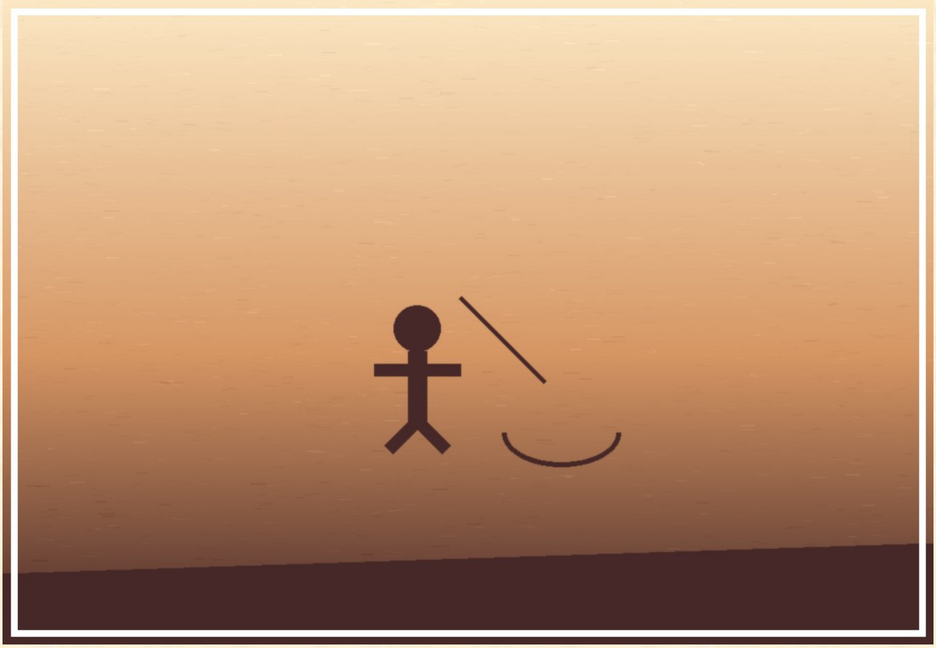

चित्र 9

गहमर पहुँचि मोतीदाइ ने दीप जरओलनि, ने फूल चढ़ओलनि। ओ सोझे पीड़ी खोदए लगलीह — अपने हाथे, जाहि हाथे बरखोसँ ओकरा लीपने छलीह।

ई विद्रोह नहि छल — ई भक्तिक अन्तिम भाषा छल। जेना बच्चा माएक आँचर घीचैत अछि — 'उत्तर दैह, नहि त' आँचरे नहि छोड़बौ।' मोतीदाइक हर कोड़ाइमे एक्कहि पुकार छल: 'प्रकट होउ माता! आइ हमरा उत्तर चाही!'

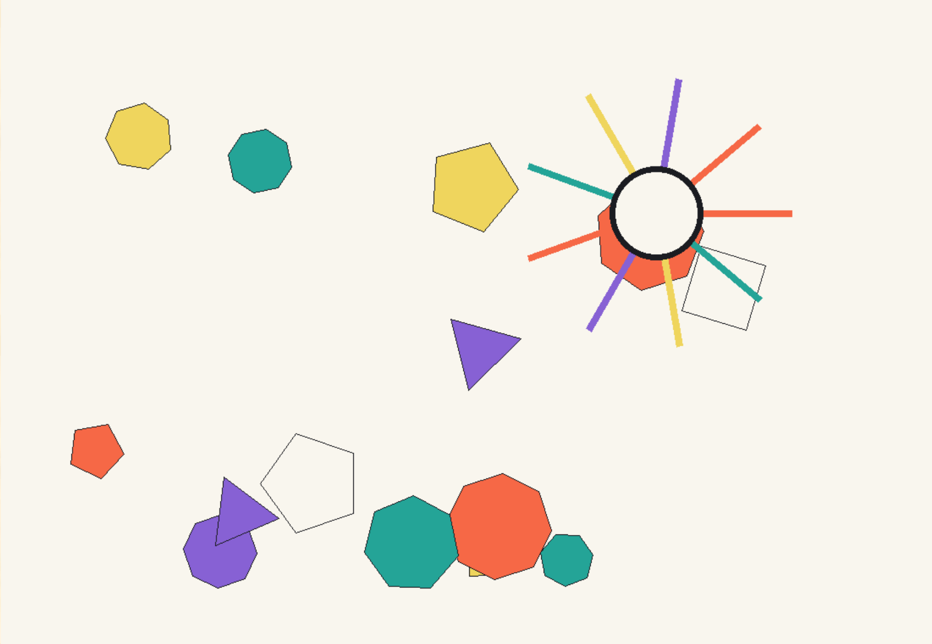

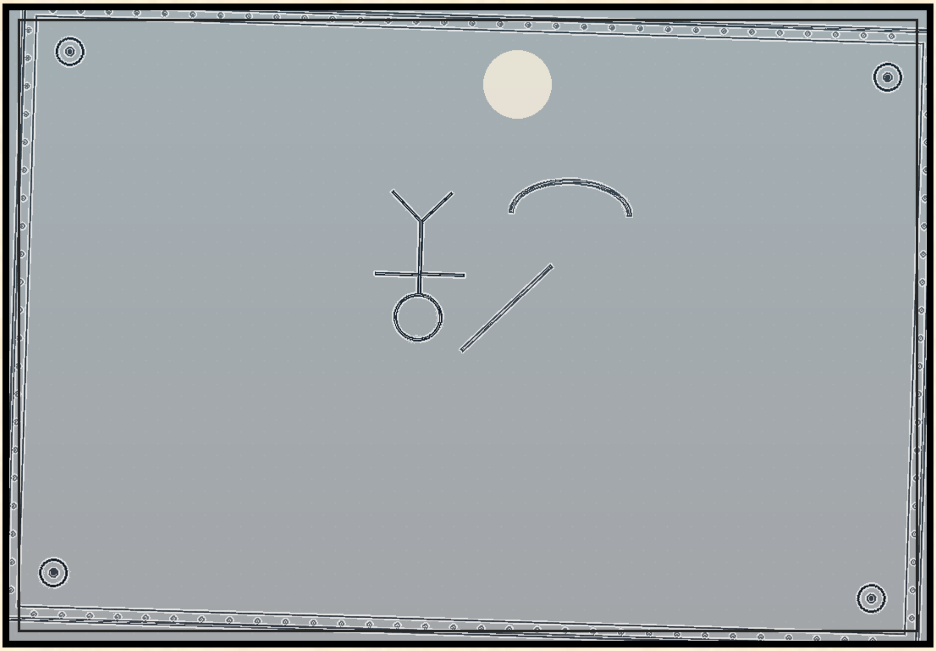

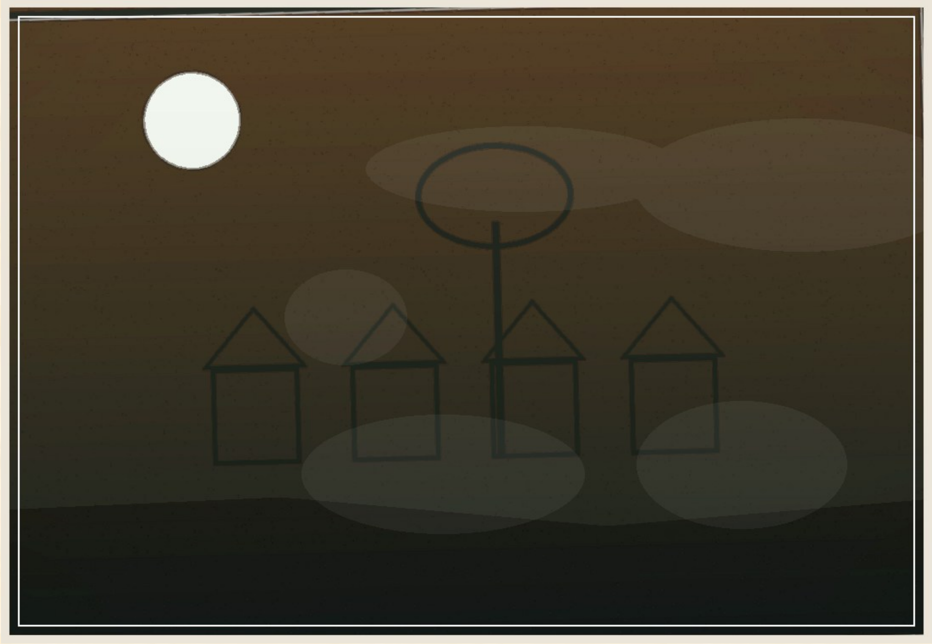

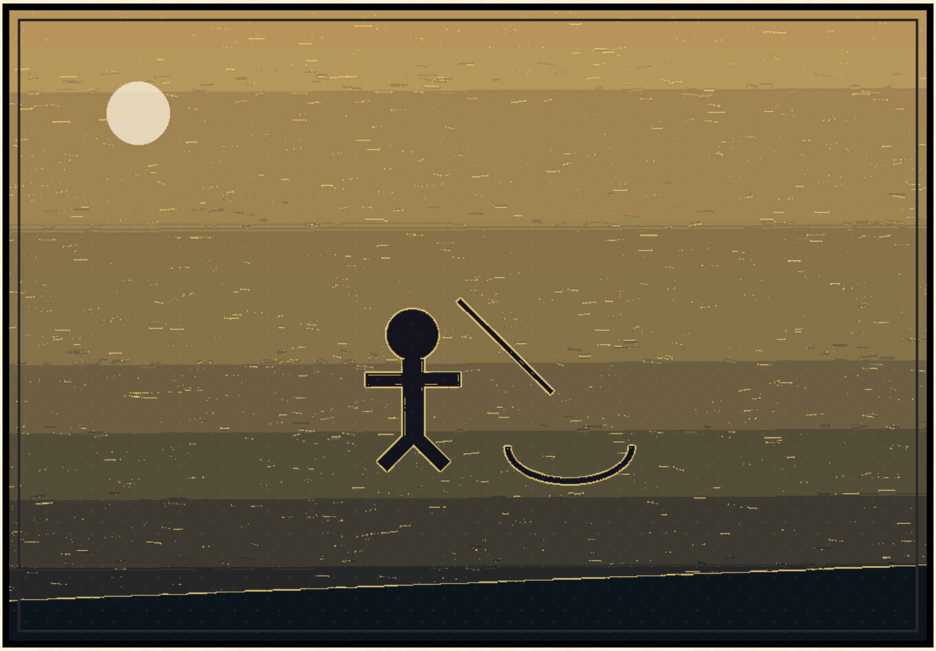

चित्र 10

गामक लोक जुमि गेल — केओ रोकए चाहलक, केओ डरे दूर ठाढ़। 'बताहि भऽ गेलीह भगतिन!' — मुदा मोतीदाइक हाथ नहि रुकल। आँखिसँ नोर आ माथसँ घाम एक्कहि संग पीड़ीक माटिपर खसैत छल।

आ तखन — नीमक पात बिनु बसातक डोलल, गहमरक हवा भारी भेल, आ पीड़ीक माटिसँ इजोत फूटल। गहिल माता प्रकट भेलीह — अपन भगतिनक आगाँ, जकर हठ आब हुनको नहि टारल भेलनि।

अध्याय ६ : माताक वचन

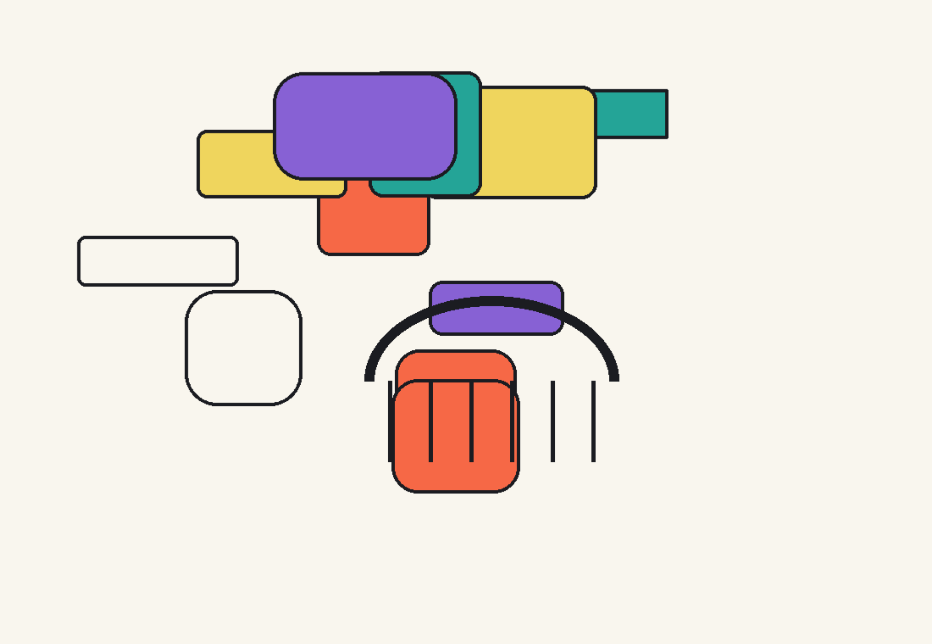

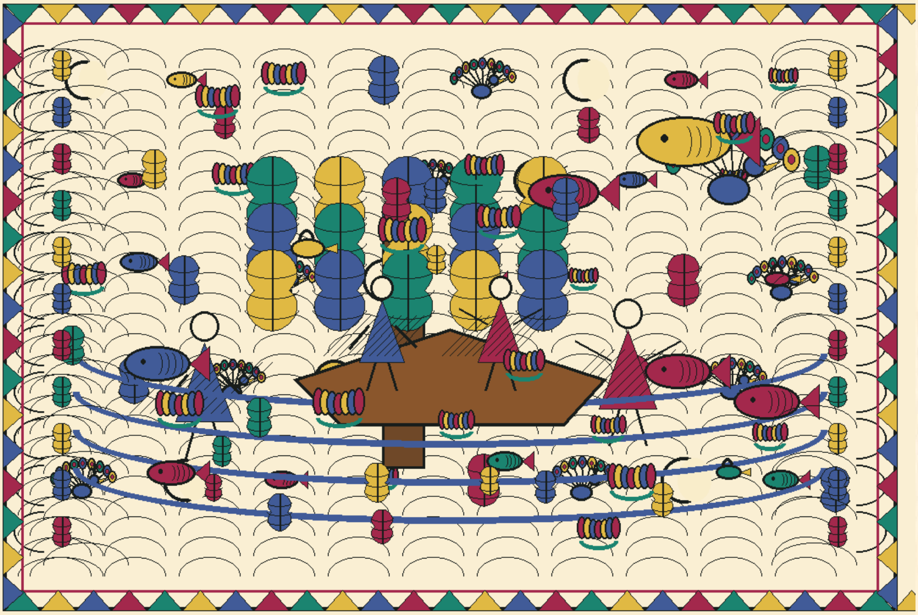

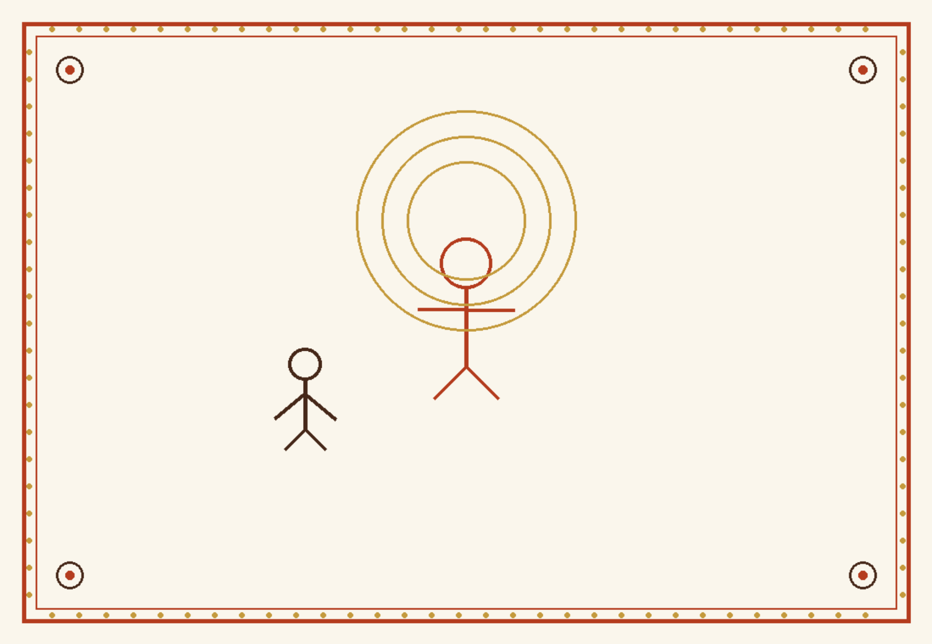

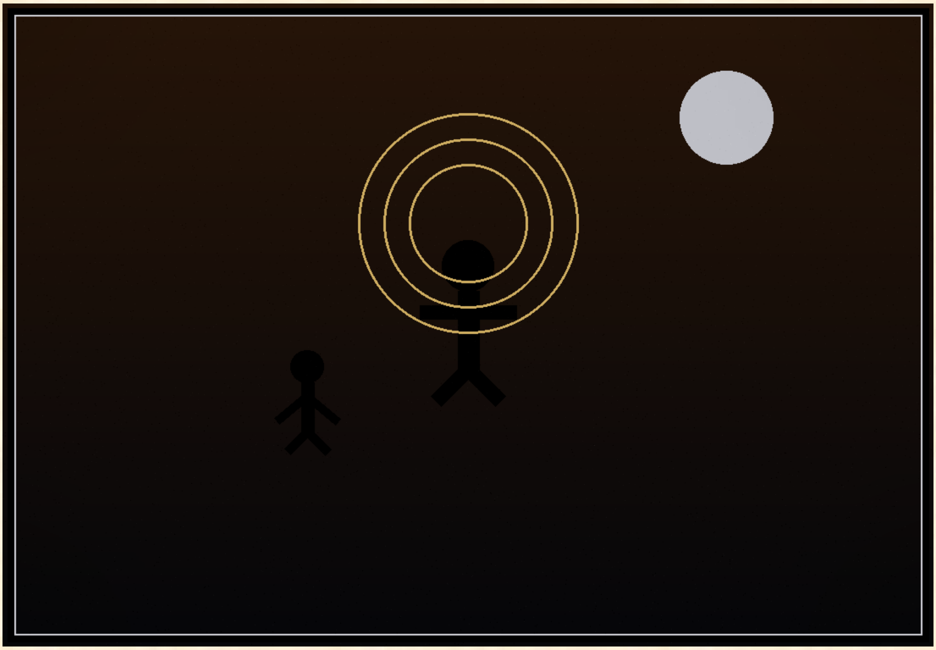

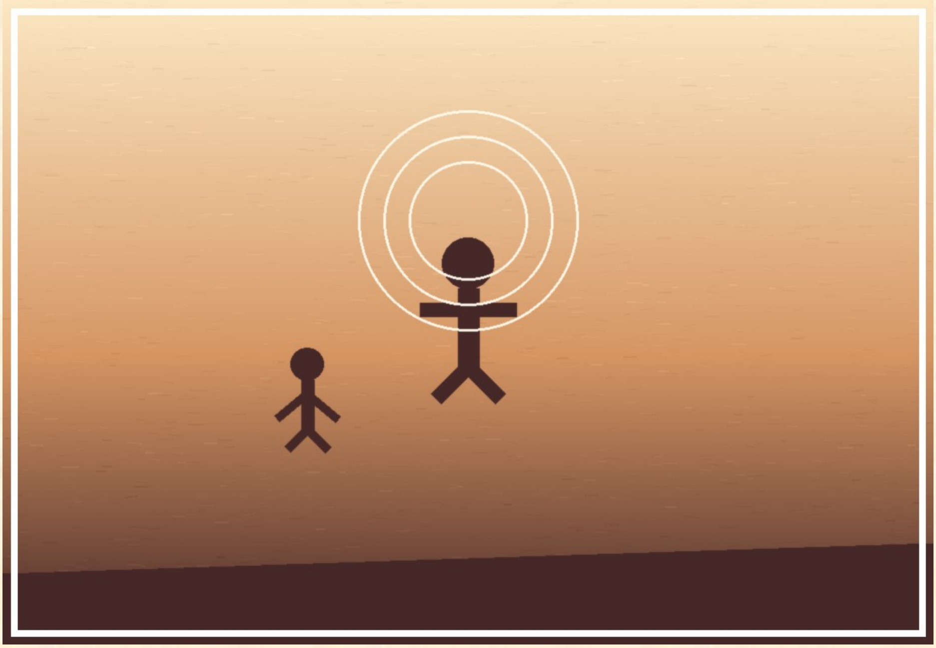

चित्र 11

'की भेलौ मोती?' — माताक स्वरमे तामस नहि, ममता छल। आ ममताक आगाँ मोतीदाइक सभटा बान्ह टूटि गेल। गोबर-साँझक ओल सन बोल, बाँझक बोली, बिसखबाक लांछन — सभटा कहि गेलीह, आ कहैत-कहैत माताक पीड़ी पकड़ि कानि पड़लीह।

'हमर सेवामे कोन कमी रहल माता, जे हमर कोरा खाली रहल? आ खाली रहल त' रहए — मुदा हमर छाहकेँ अशुभ किए कहल गेल?'

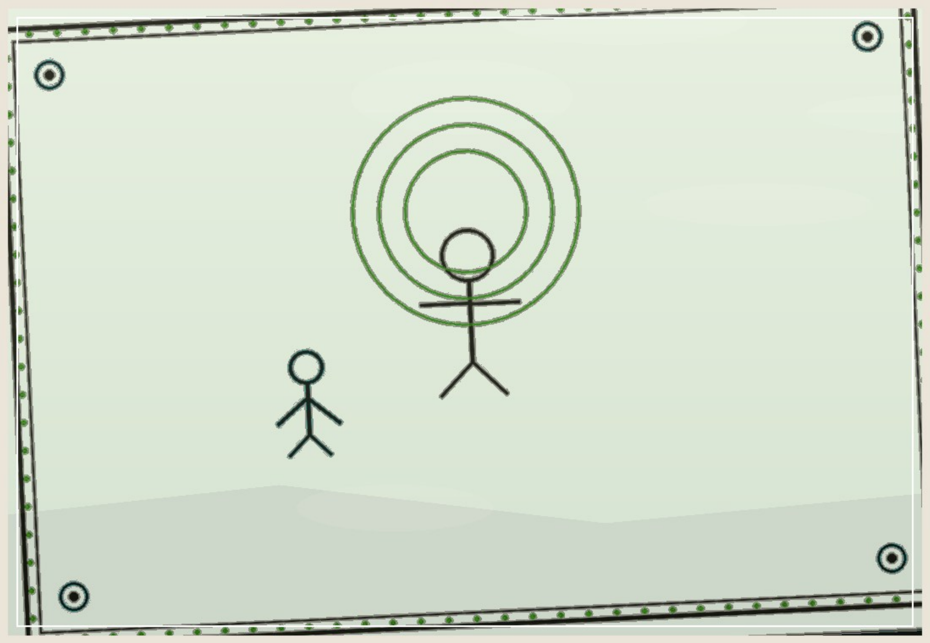

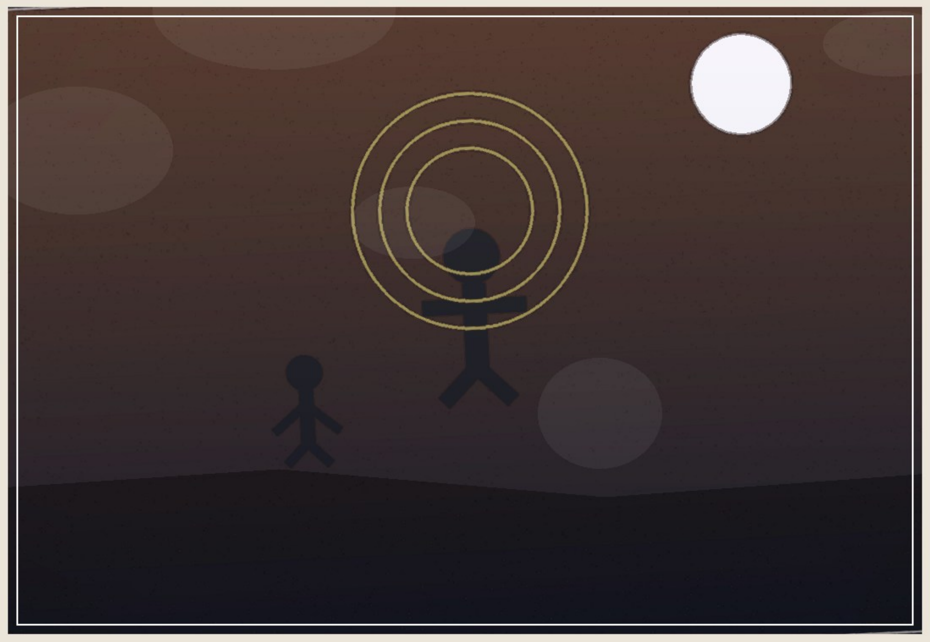

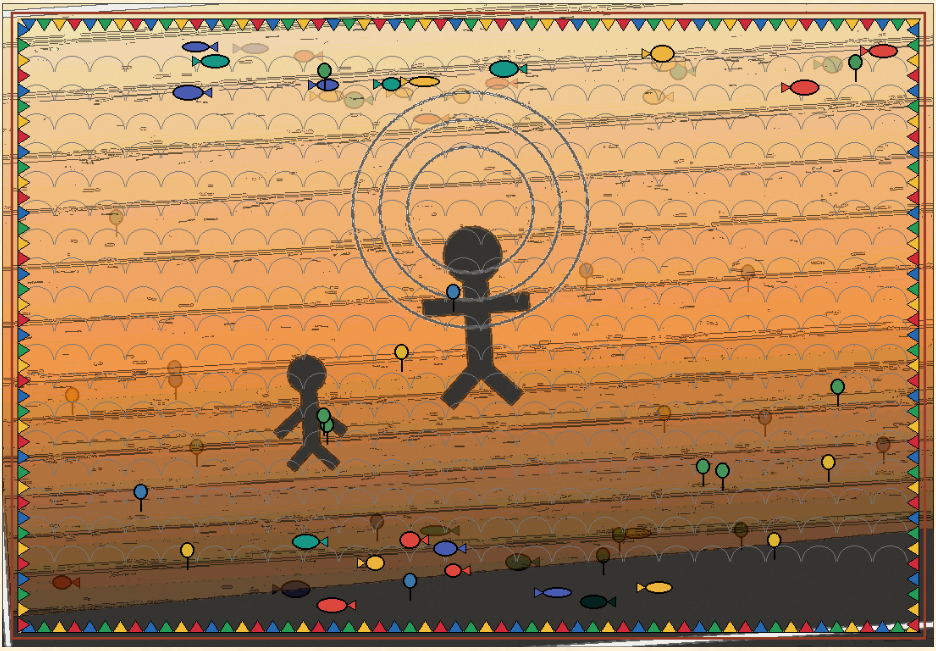

चित्र 12

गहिल माता चुप रहलीह — कारण उत्तर हुनको लग ओहि क्षण नहि छलनि। सन्तानक लेखा देवीक हाथमे नहि — इन्द्रक दरबारमे रहैत अछि, जतय जन्म-जन्मक बही खुजैत अछि।

'ठीक छै,' — माता कहलनि — 'हम इन्द्रक दरबार जाएब, आ अहाँ लेल बच्चा माँगब।' — देवी अपन भगतिन लेल याचक बनतीह! सुननिहार गामक लोक स्तब्ध। मोतीदाइक आँखिमे पहिल बेर बरखो बाद आस जागल — आ आसे त' सभसँ मीठ आ सभसँ खतरनाक वस्तु थिक।

अध्याय ७ : इन्द्रक दरबार

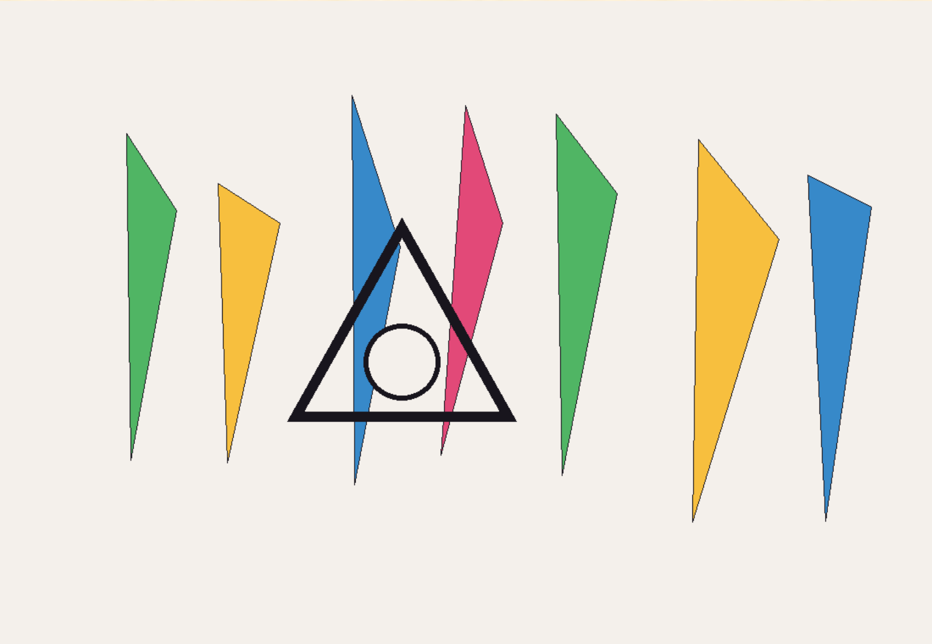

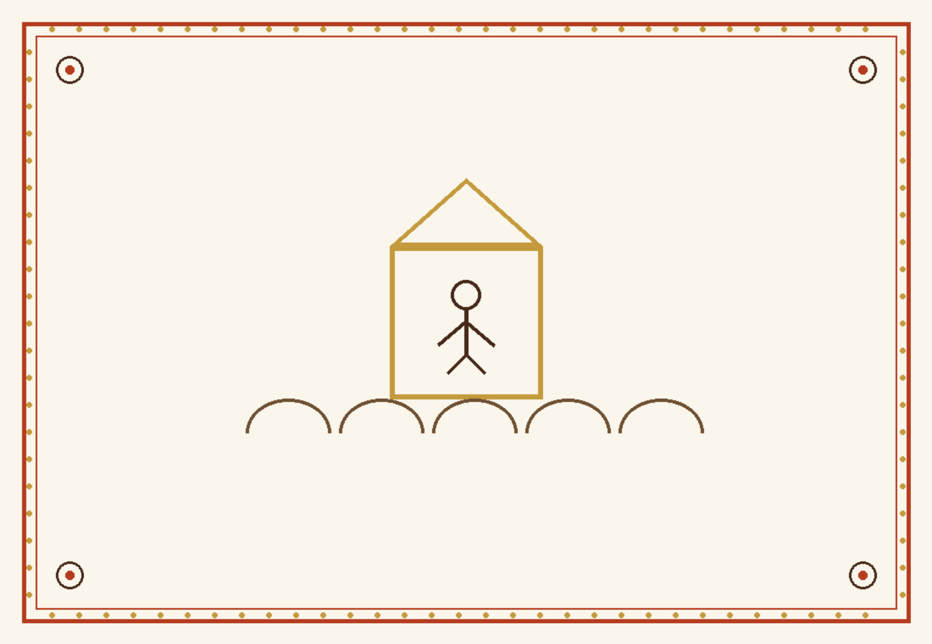

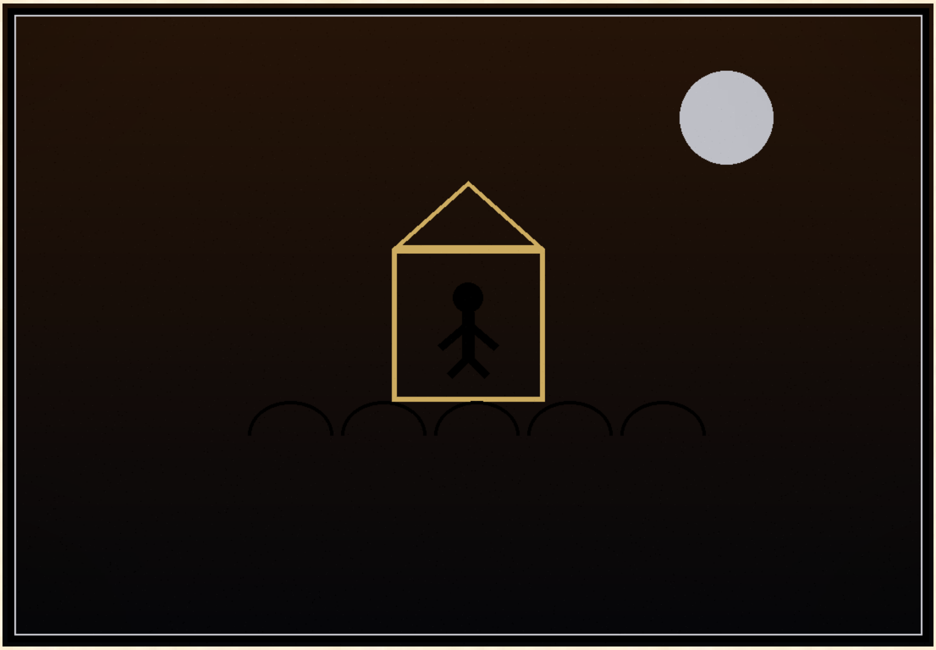

चित्र 13

इन्द्रक दरबार — जतय मेघ पर्दा थिक, बिजली दीप, आ जतय सभ जीवक भाग्यक बही राखल अछि। गहिल माता ओतय पहुँचलीह — देवी बनि कऽ नहि, एकटा भगतिनक माए बनि कऽ।

'हमर भगतिन मोतीदाइ लेल सन्तान चाही, देवराज।'

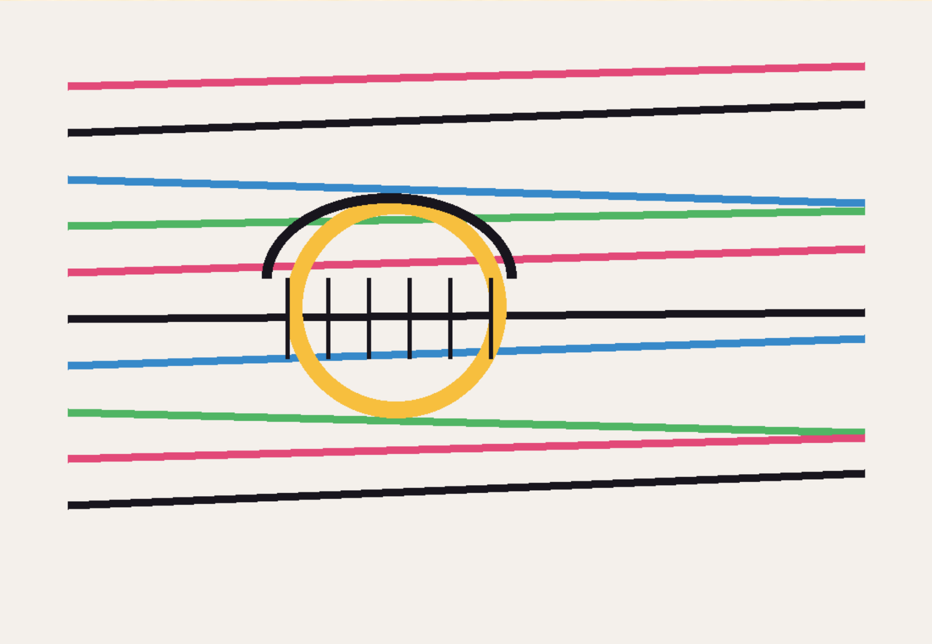

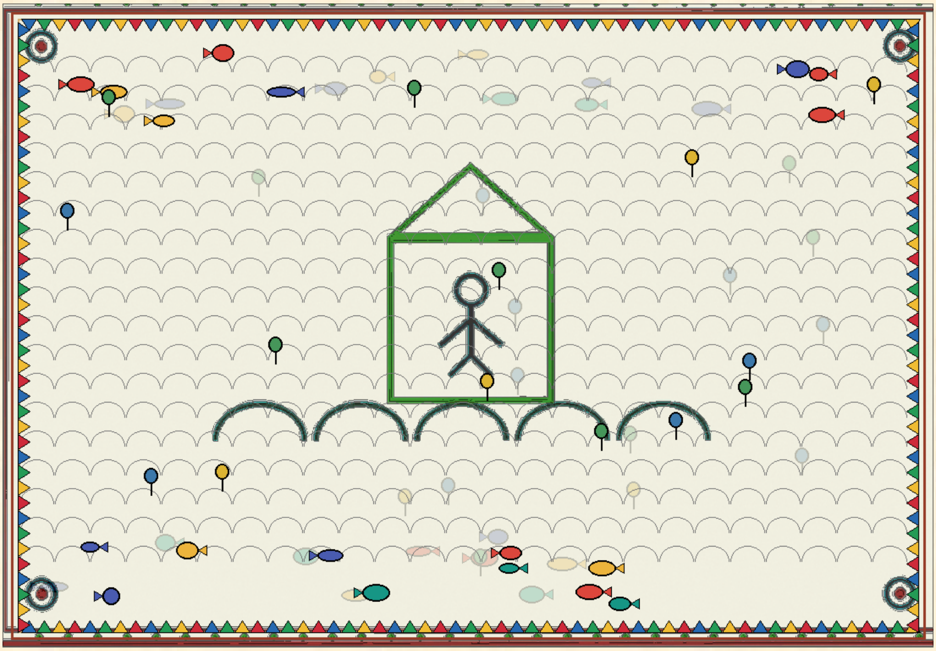

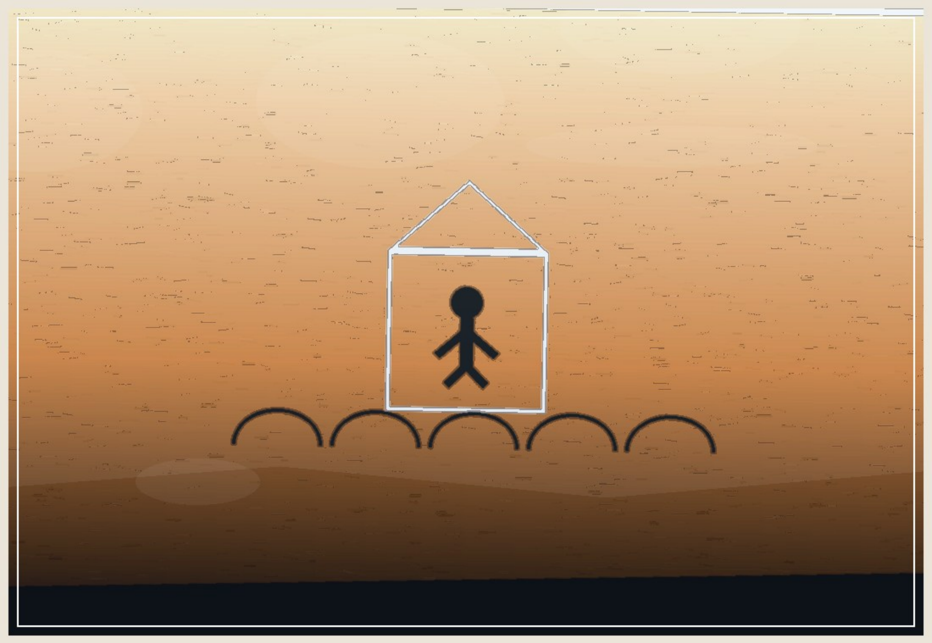

चित्र 14

इन्द्र बही मंगओलनि। पन्ना पलटाएल — जन्म-जन्मक हिसाब, कर्म-कर्मक जोड़। आ फेर देवराजक माथ आस्ते-आस्ते हिलल। 'पूर्व जन्मक फल छै, माता। ओकरा बच्चा नहि लिखल छै।'

नहि लिखल छै — तीन शब्द, आ तीनूमे पाथरक वजन। गहिल माता बहुत ठाढ़ि रहलीह, बहुत कहलनि — मुदा विधानक बहीपर देवीक आग्रहो नहि चलल। ओ घुरलीह — खाली हाथ, भारी मोन। देवी छलीह, तेँ झूठ नहि बाजि सकलीह; माए-सन छलीह, तेँ साँच कहबामे हुनक करेज कटैत छल।

अध्याय ८ : मरबे नीक

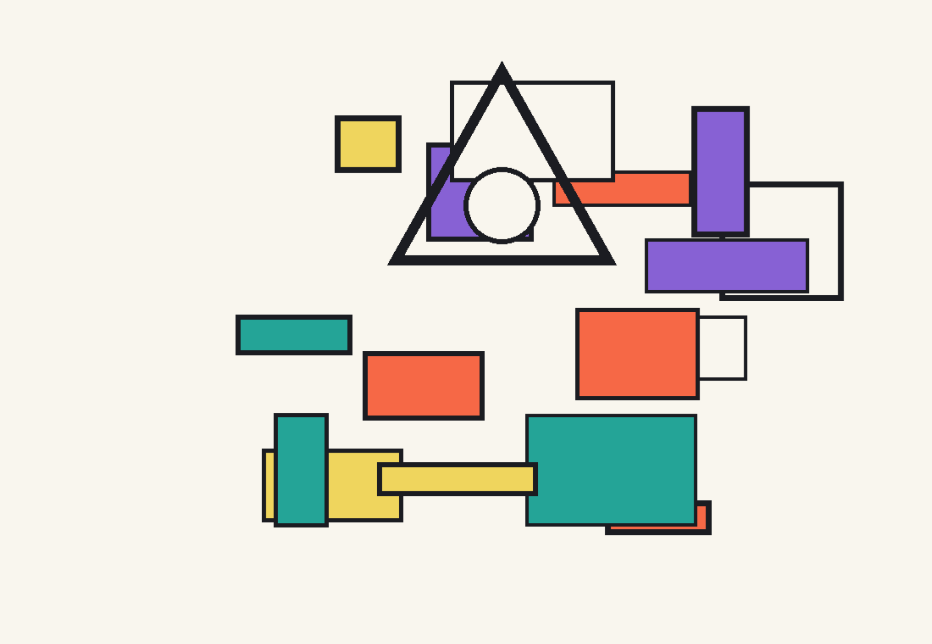

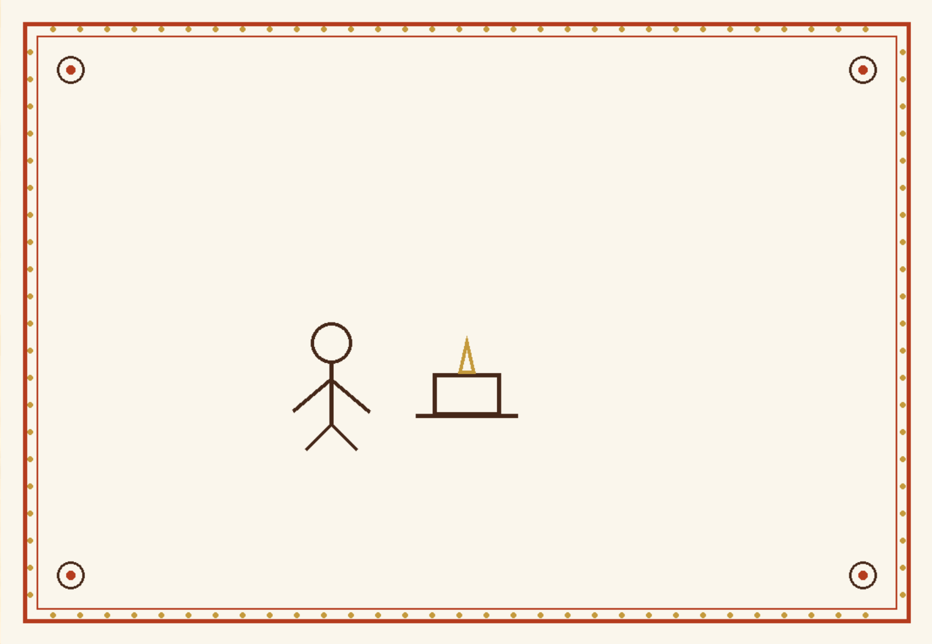

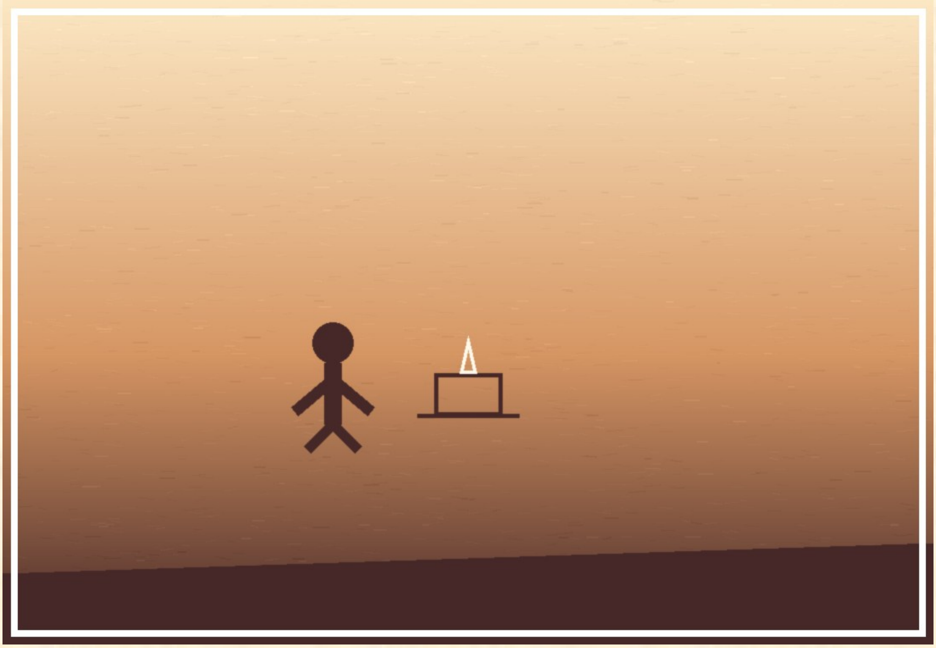

चित्र 15

'पूर्व जन्मक फल छौ, मोती। तोरा बच्चा नहि लिखल छौ।' — माता सभटा साँच कहि देलनि।

मोतीदाइ सुनलनि, आ हुनक भीतर जे अन्तिम दीप टिमटिमाइत छल, से मिझा गेल।

'आह! तखन हमर जीवन निरर्थक अछि। सेवा केलहुँ — फल नहि। लांछन सहलहुँ — उत्तर नहि। आ आब त' विधानो कहि देलक जे आस राखबो पाप। एहिसँ त' मरबे नीक!'

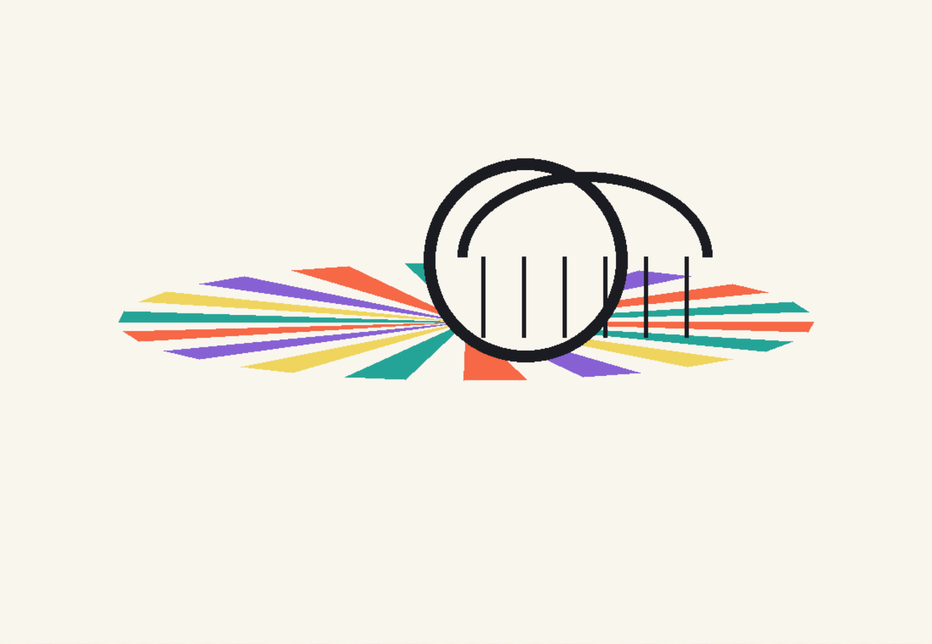

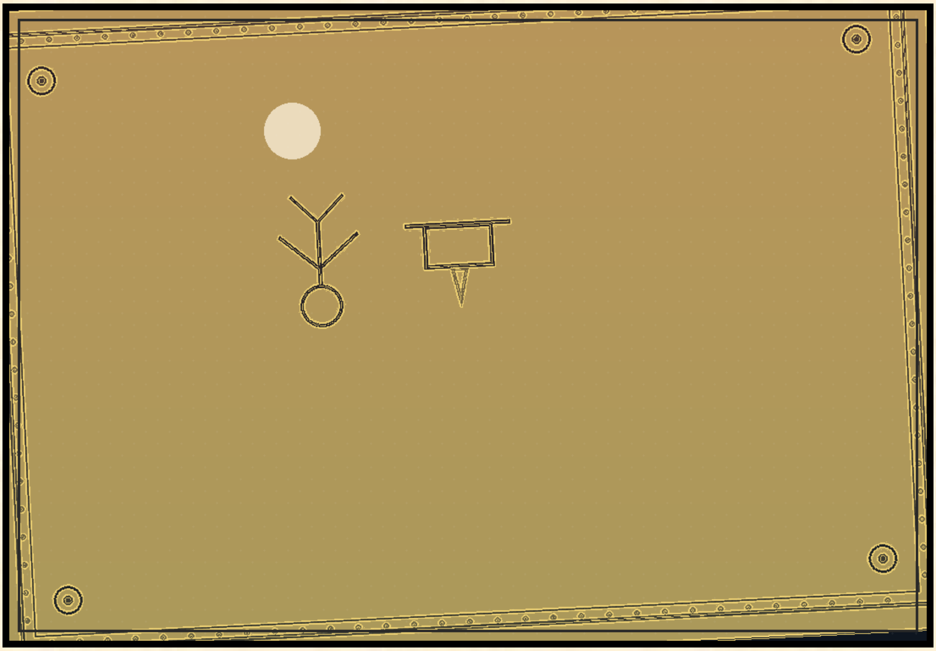

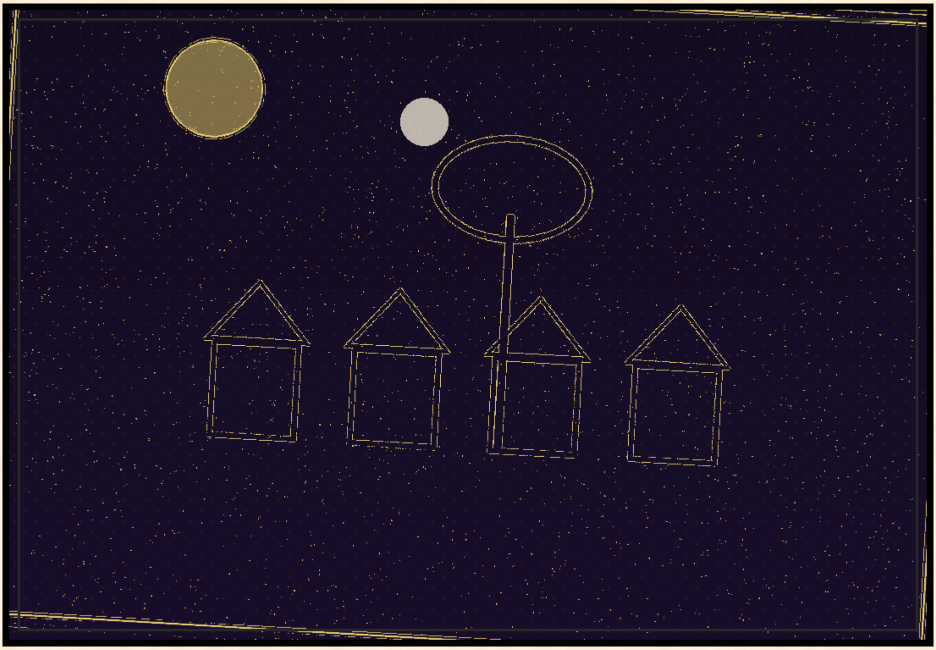

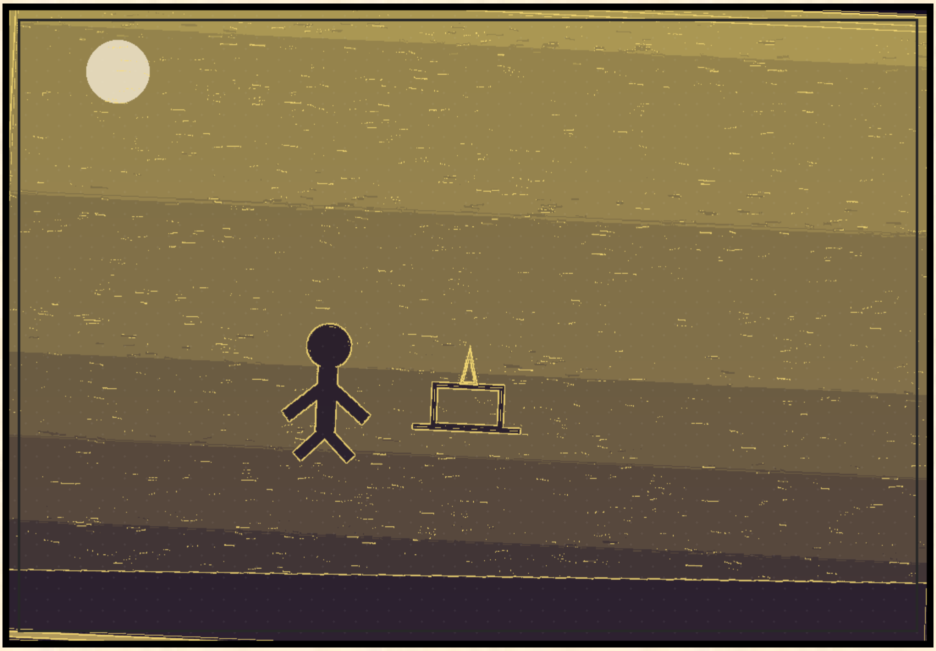

चित्र 16

आ ई खाली बोल नहि छल। मोतीदाइ मरबाक सूरसार शुरू कऽ देलनि — अन्न त्यागि देलनि, घाट छोड़ि देलनि, आ आँखिमे ओ शून्य उतरि आएल जे शब्दसँ बेसी डराओन होइत अछि।

गहिल माता ई देखलनि — आ देवीक करेज भालरि जकाँ हिलऽ लागल। बहीमे जे लिखल छै से विधान; मुदा आँखिक आगाँ भगतिन मरए, ई कोन विधान? आ तखन माता ओ केलनि जे भक्ति-गाथाक सभसँ ऊँच क्षण थिक — देवी दोसर बेर याचक बनलीह। एहि बेर आग्रह नहि — हठ लऽ कऽ।

अध्याय ९ : दोसर यात्रा आ शर्त

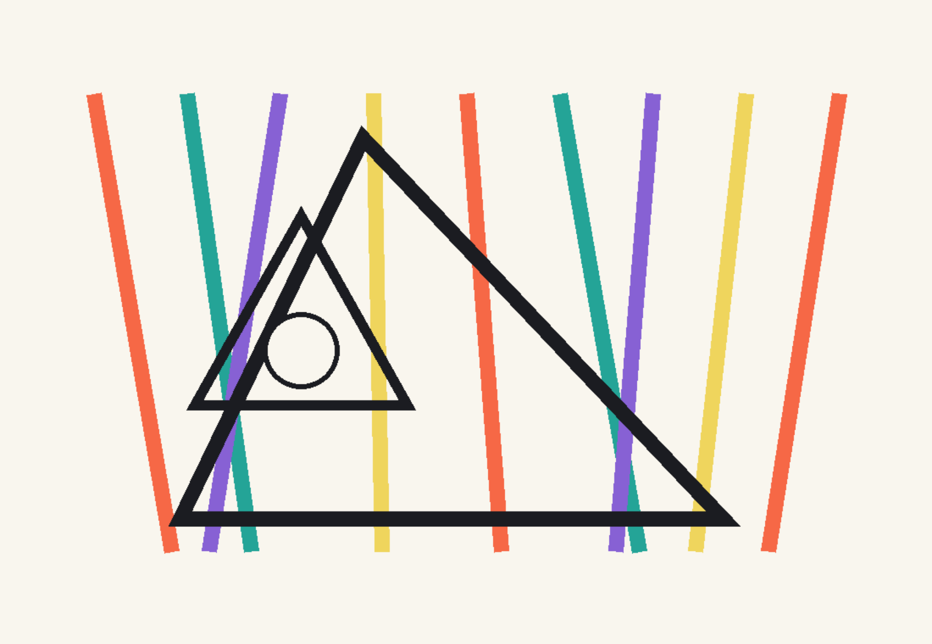

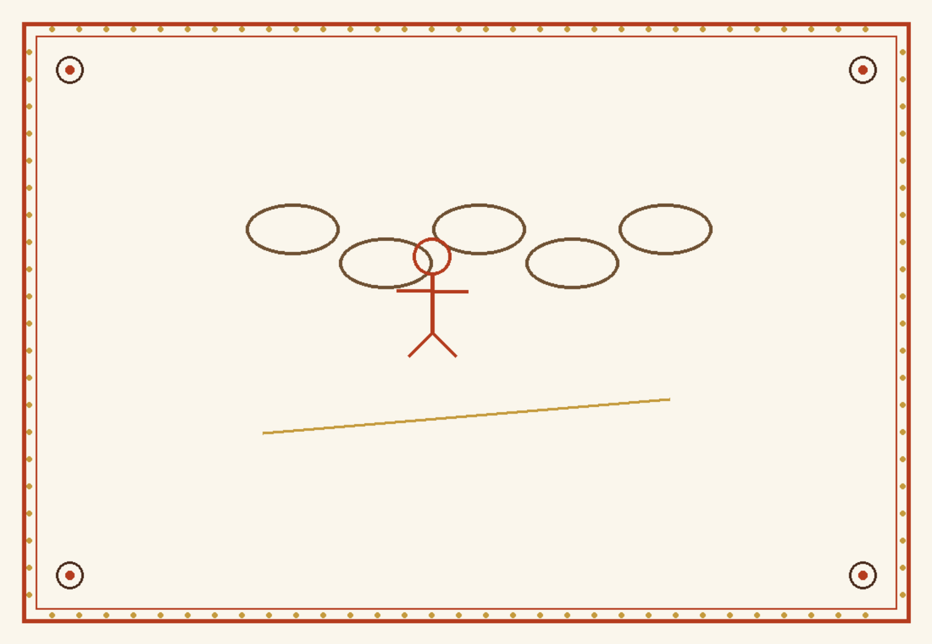

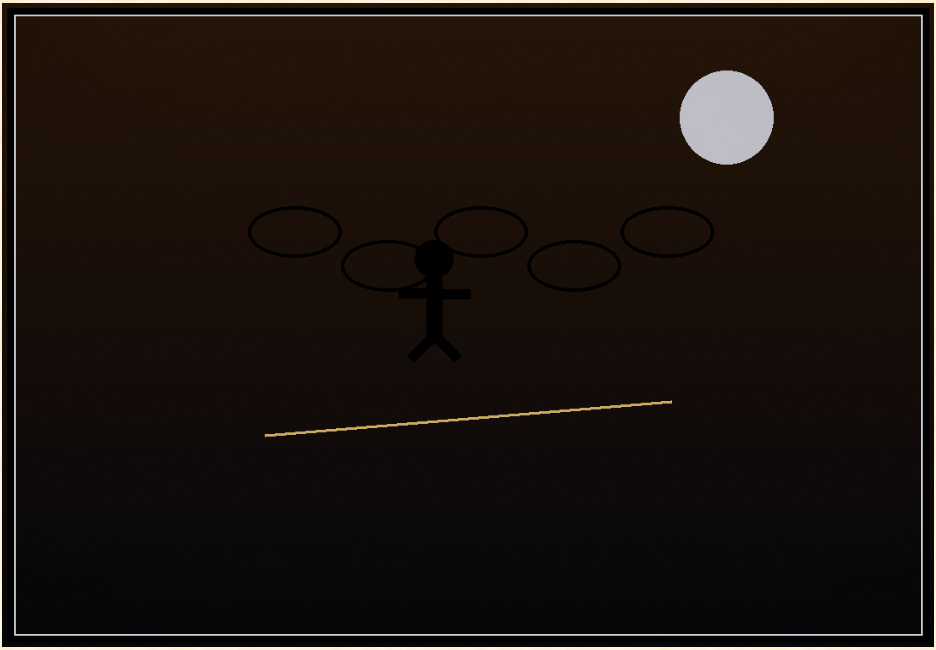

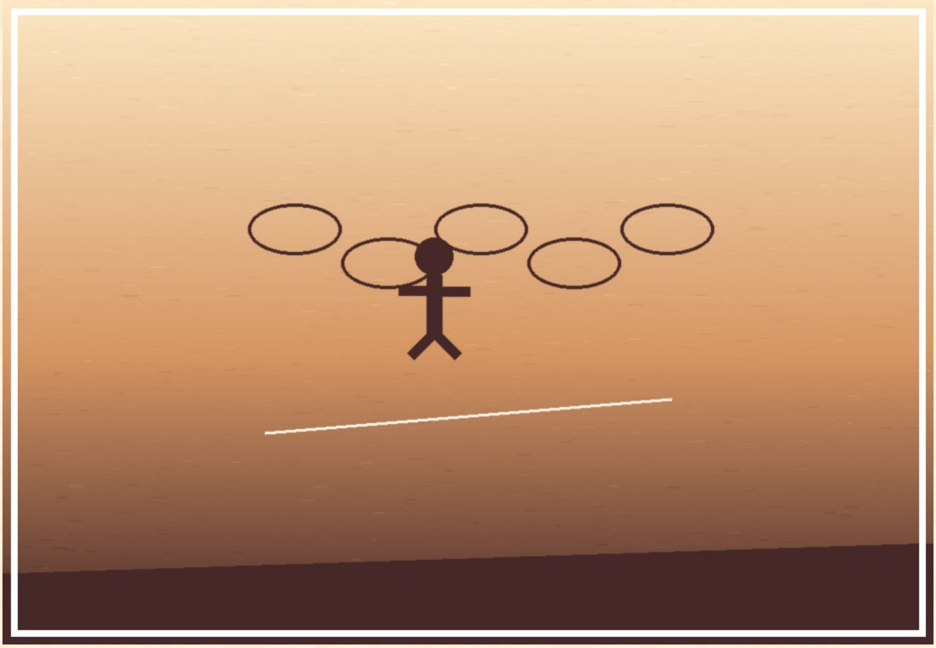

चित्र 17

गहिल माता फेर इन्द्रक दरबार गेलीह। सभटा गप कहलनि — भगतिनक टूटब, अन्न-त्याग, मृत्युक सूरसार। 'हमर भगतिन हमरे भक्तिक कारण मरती, देवराज? विधानकेँ कोनो बाट निकालए पड़तै।'

इन्द्र फेर बही खोललनि। विधान अटल — मुदा विधानक भीतरो कखनो काल एकटा सिलेट रहैत छै, जतय करुणा किछु पाँति जोड़ि सकैत अछि। बहुत सोचला उत्तर देवराज बजलाह —

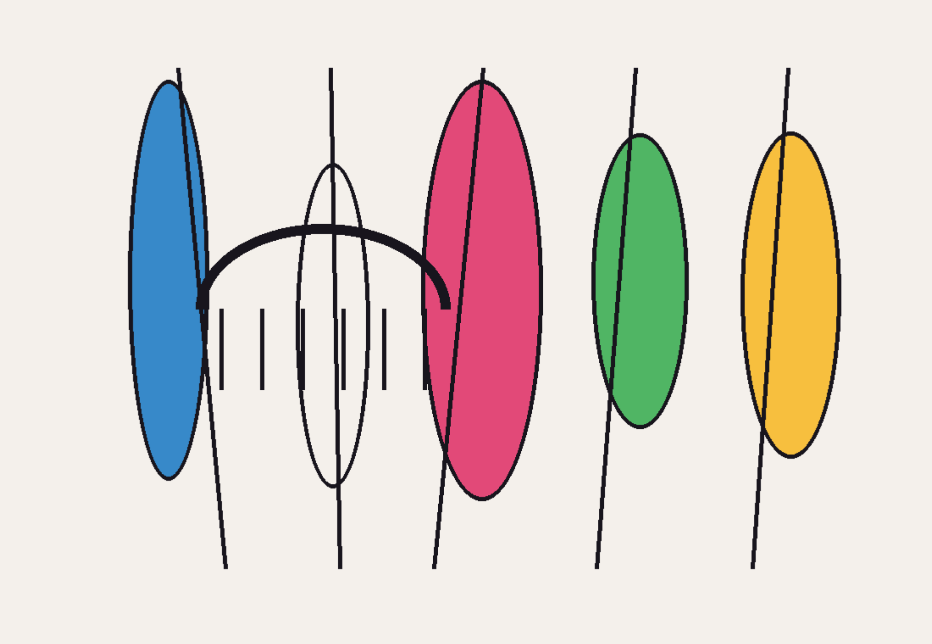

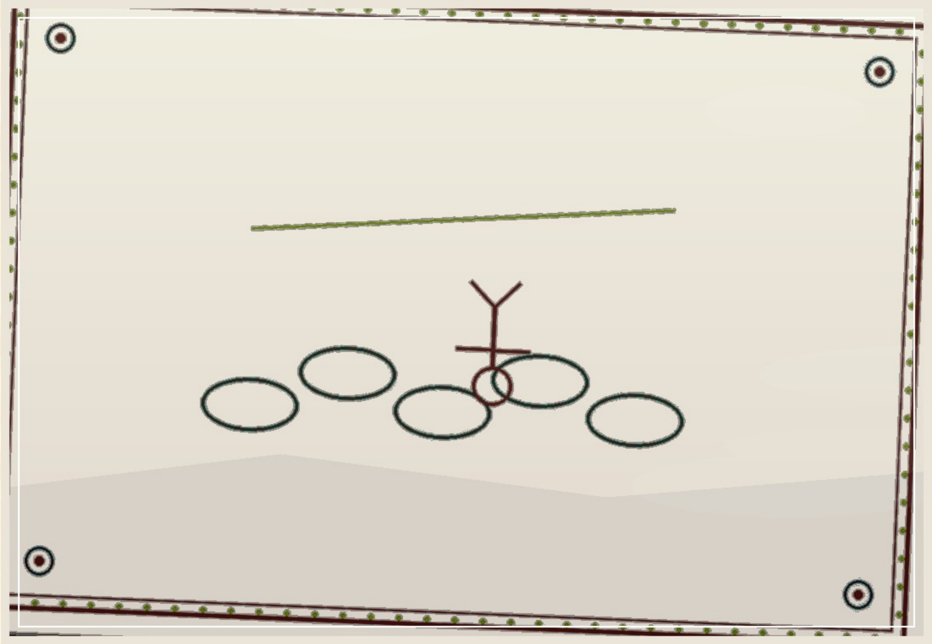

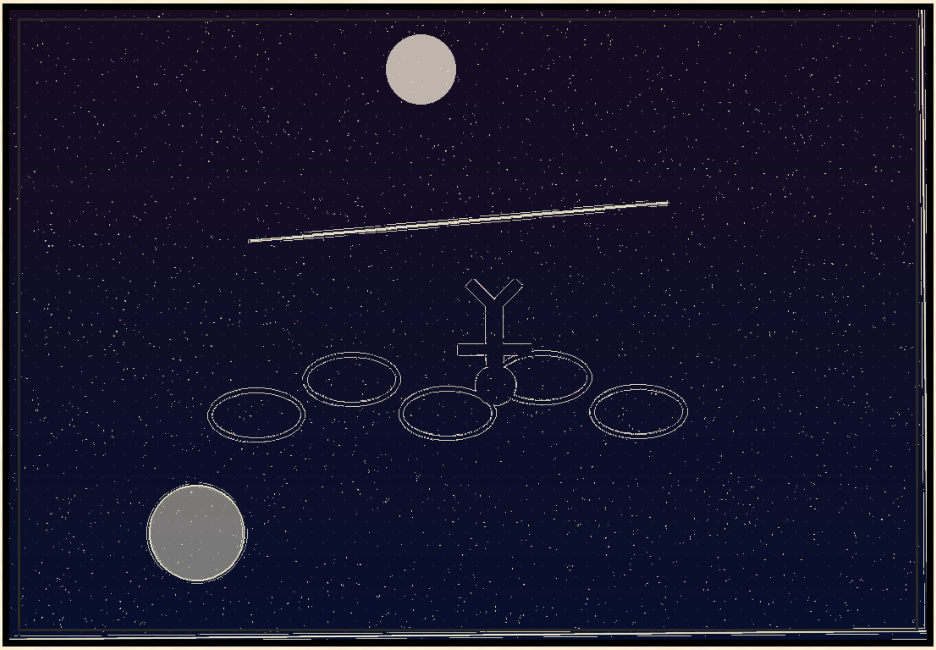

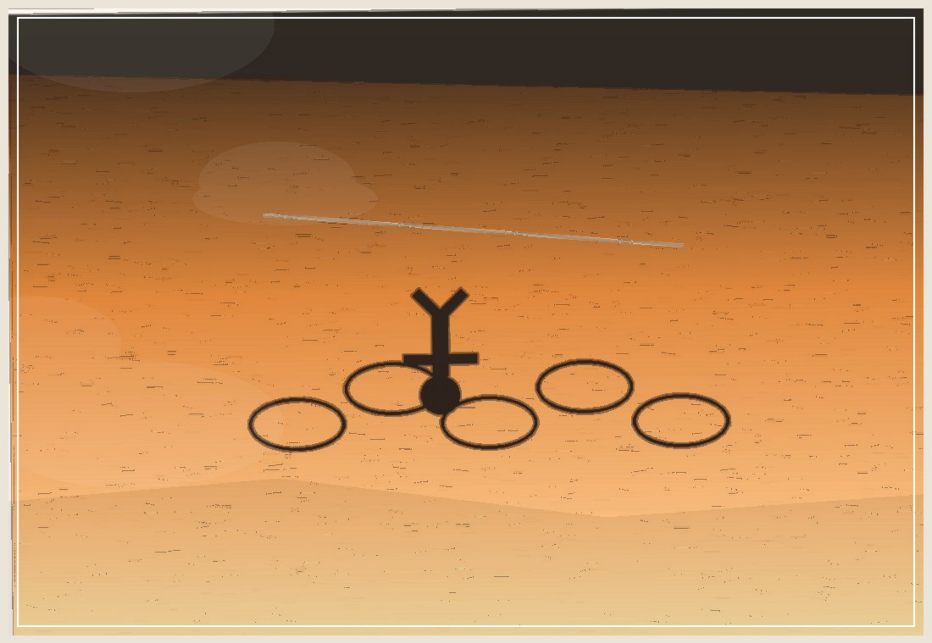

चित्र 18

'ठीक छै। बच्चा त' होएतन्हि मोतीदाइकेँ... मुदा छठिहारी दिन ओ मरि जएतन्हि।'

छह दिन। बस छह दिनक मातृत्व — आ सातम भोरसँ पहिने अन्त। ई वरदान छल आकि आरो पैघ शाप? गहिल माता ई प्रश्न नेने घुरलीह। मुदा मोतीदाइ जखन सुनलनि, त' हुनक उत्तर सोझ छल — 'छह दिन? माता, जे कोरा जिनगी भरि खाली रहल, तकरा लेल छहो दिन छह जुग थिक। हमरा स्वीकार अछि।' — माए बनबाक साध केर आगाँ मृत्युक तिथि सेहो छोट पड़ि गेल।

अध्याय १० : छह दिनक संसार

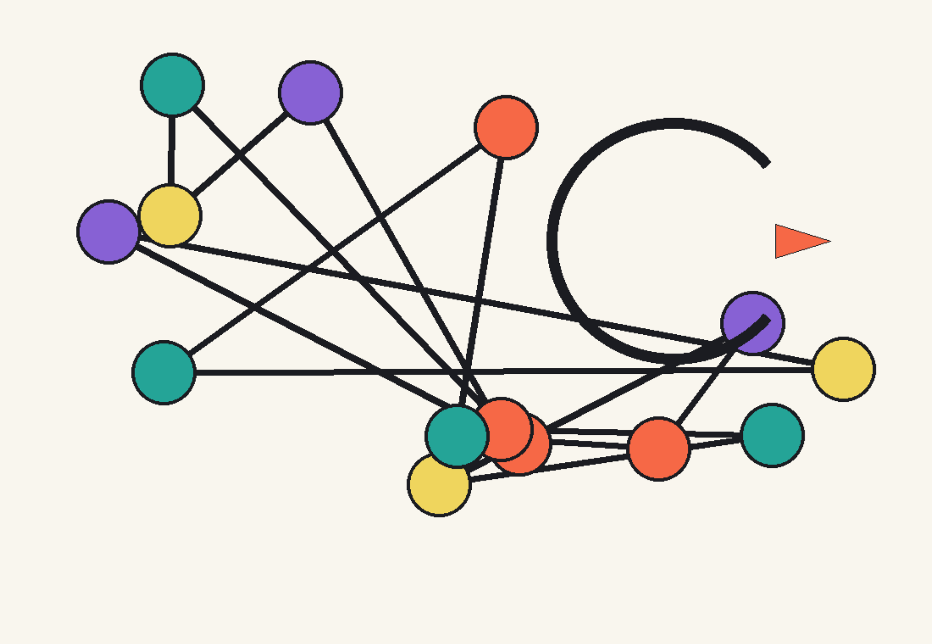

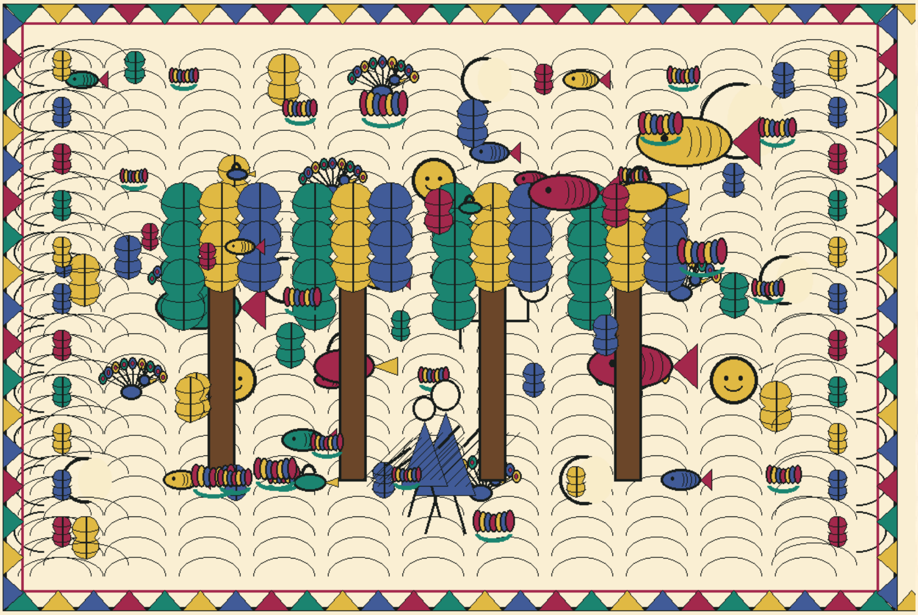

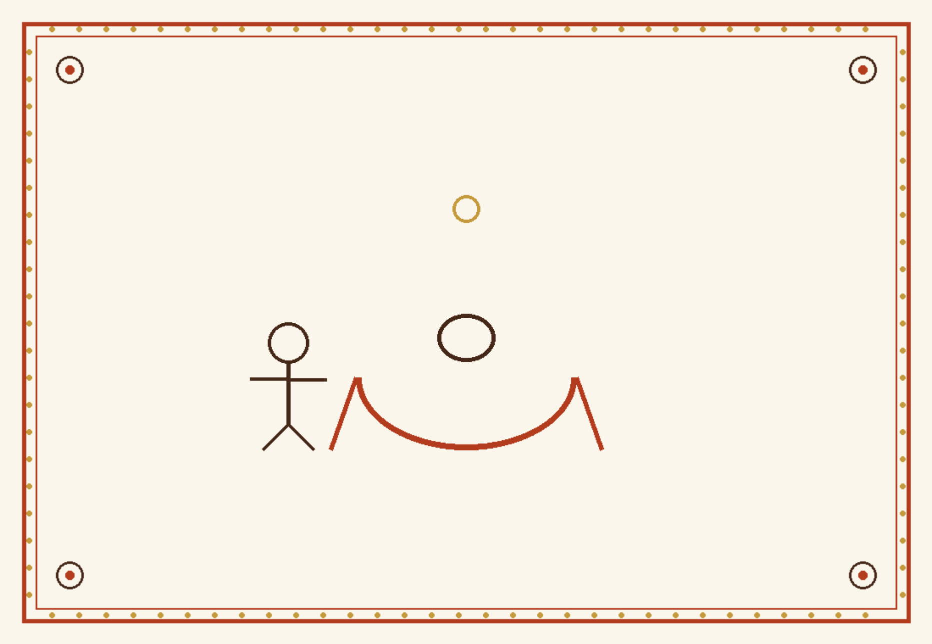

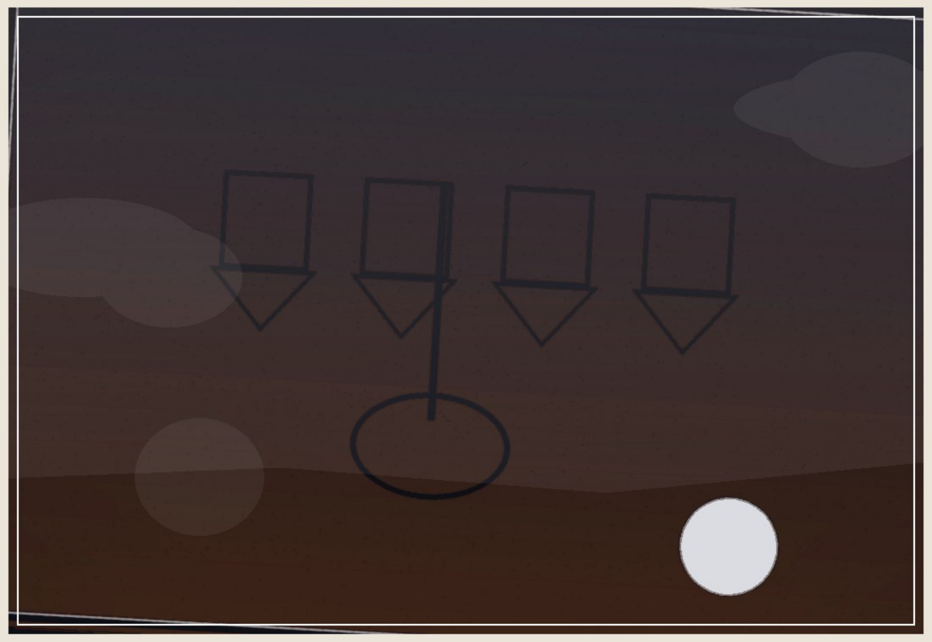

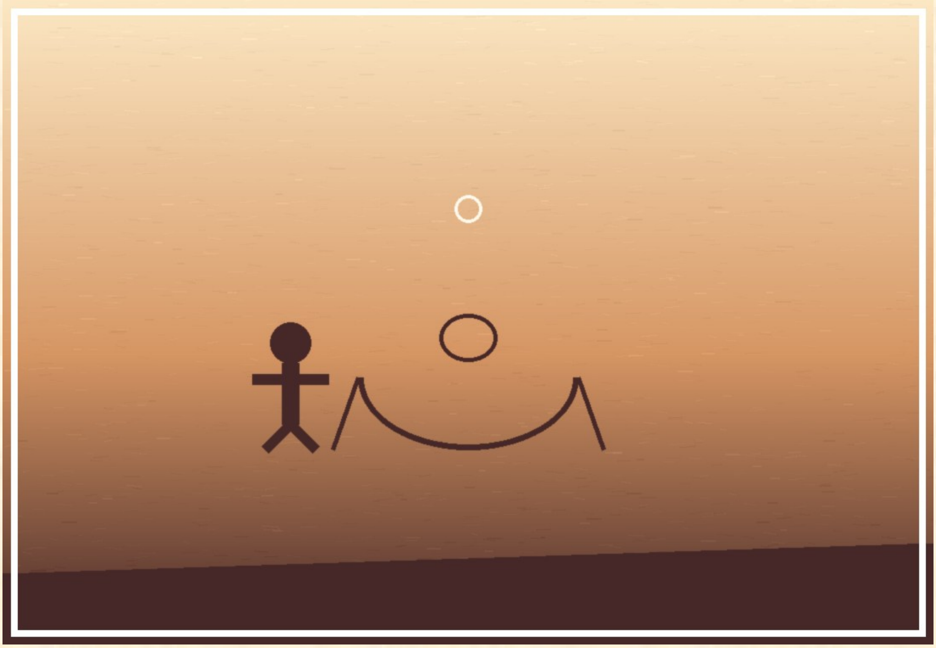

चित्र 19

आ से भेल — मोतीदाइक कोरा भरल। बच्चा जनमल: निर्मल, निरोग, चानक टुकड़ी सन। उजैनी गाम अकचकाएल — जकरा 'बाँझ' कहल गेल छल, तकर आँगनमे सोहर गूँजि गेल!

आ ओ छह दिन! मोतीदाइ ओहि छह दिनमे पूरा मातृत्व जीलनि — जेना केओ एक्कहि साँझमे पूरा जिनगीक भोज कऽ लिअए। पहिल दिन ओ बच्चाकेँ खाली तकैत रहलीह — पिपनी झपकब सेहो घाटा बुझाइत छलनि। दोसर दिन लोरि — जतेक लोरि जनैत छलीह, सभटा। तेसर दिन काजर, चौठ दिन नामकरणक साध, पाँचम दिन...

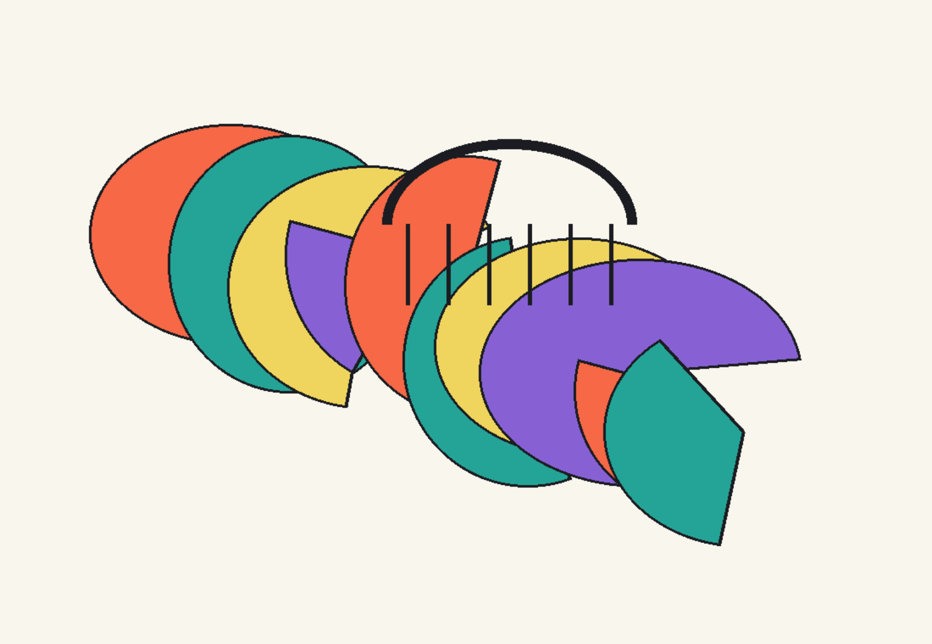

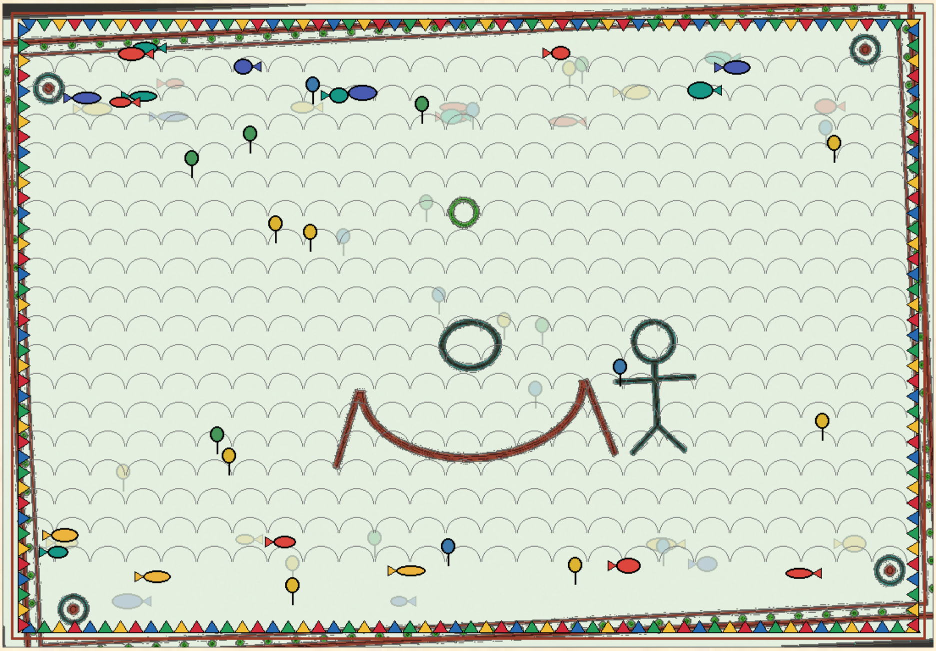

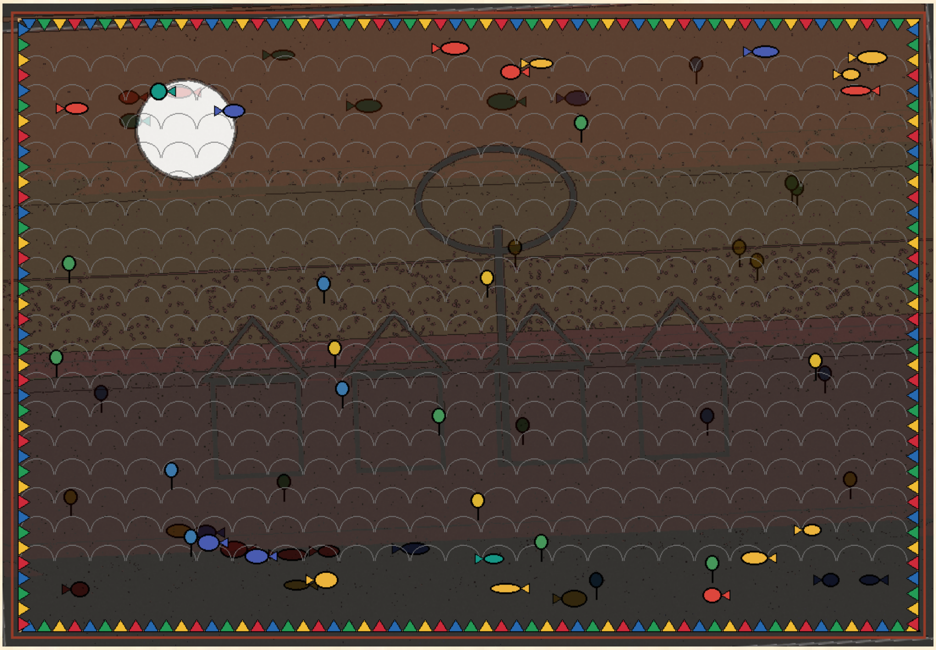

चित्र 20

पाँचम दिनसँ हुनक लोरिमे कम्पन आबए लागल। गनती त' हुनको बुझल छल। बच्चाकेँ छातीसँ लगओने ओ राति भरि जागलि रहलथि — निन्नकेँ कहथि, 'तों बादमे अबिहँ; एखन हमर बेर छी।'

आ गाम? गाम चुपचाप देखैत छल। गुअरटोलीक ओ जनानी सभ सेहो — जिनकर ओल सन बोलसँ ई गाथा शुरू भेल छल — आब अपन दरबज्जापर ठाढ़ भऽ ओहि आँगन दिस तकैत छलि, जतय छह दिनक संसार बसल छल। ककरो मुँहसँ आब 'बाँझ' शब्द नहि निकलल — निकलत कोना।

अध्याय ११ : छठिहारी

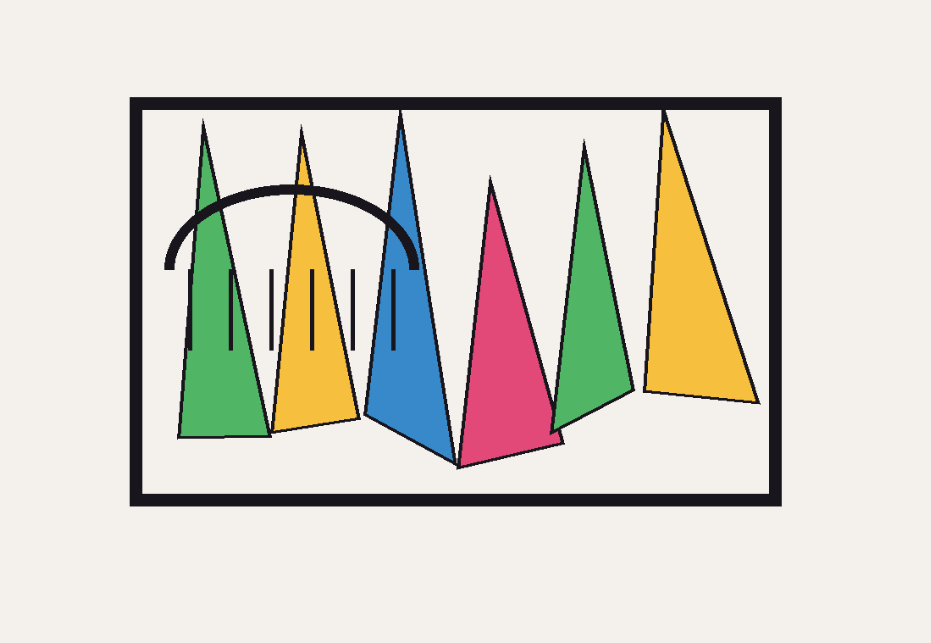

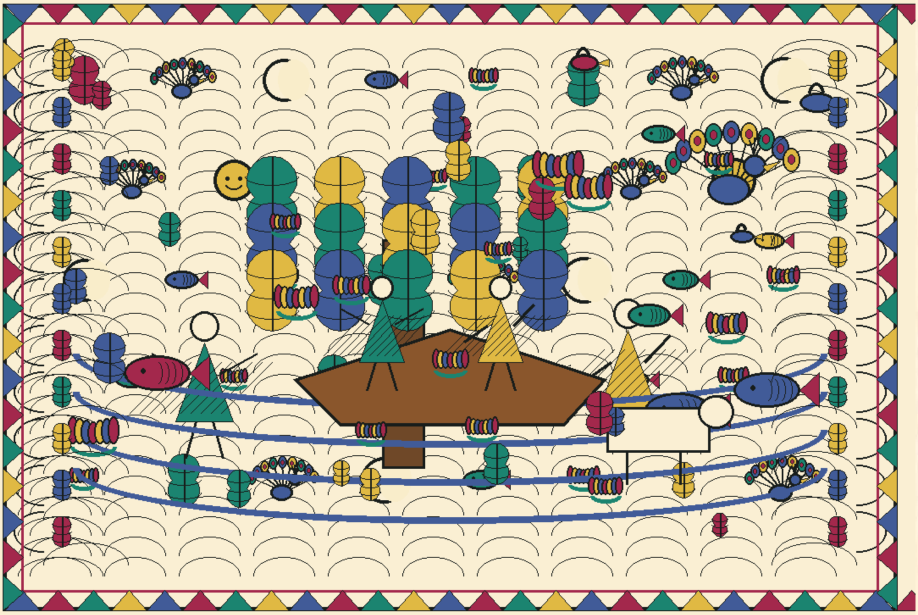

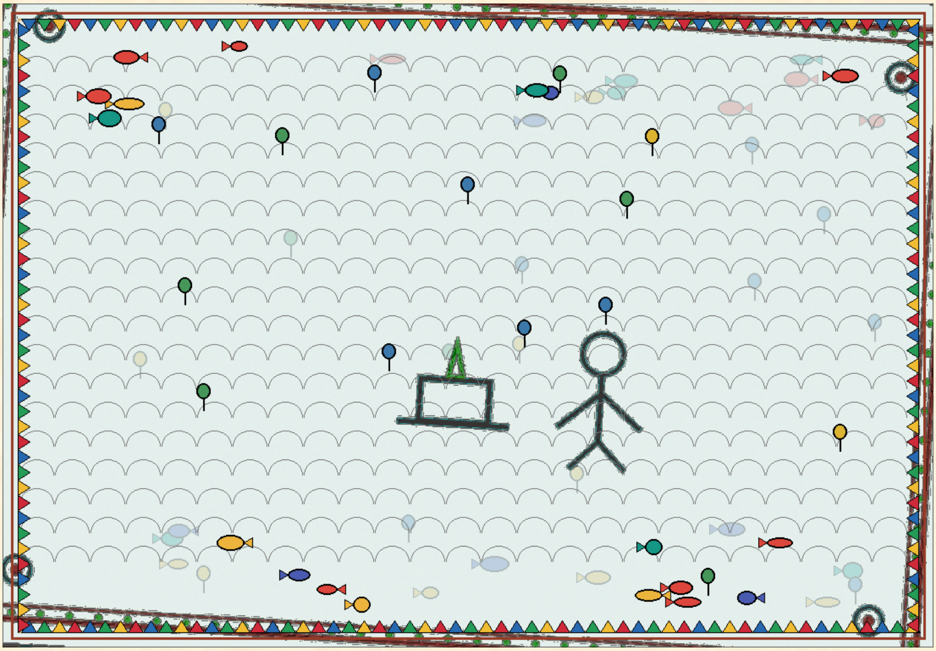

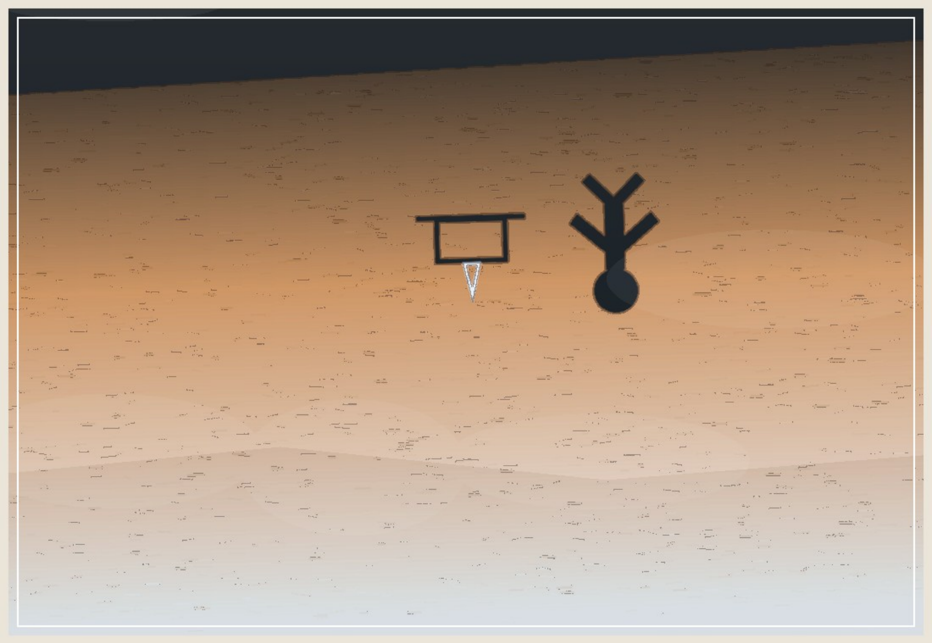

चित्र 21

छठिहारी दिन आएल — जाहि दिन घर-घरमे छठिक पूजा होइत अछि, षष्ठी माता नवजातक रखबारि लेल पूजल जाइत छथि। मोतीदाइक आँगनमे सेहो छठिहारीक दीप जरल — मुदा ओहि दीपक लौ ओहि राति सभसँ बेसी काँपैत छल।

मोतीदाइ बच्चाकेँ अन्तिम बेर नहओलनि, काजर लगओलनि, आ छातीसँ लगा कऽ बैसि रहलीह। ने कानब, ने चिचिआएब — खाली एकटक ओहि मुँहकेँ तकैत रहब, जे काल्हि नहि रहत।

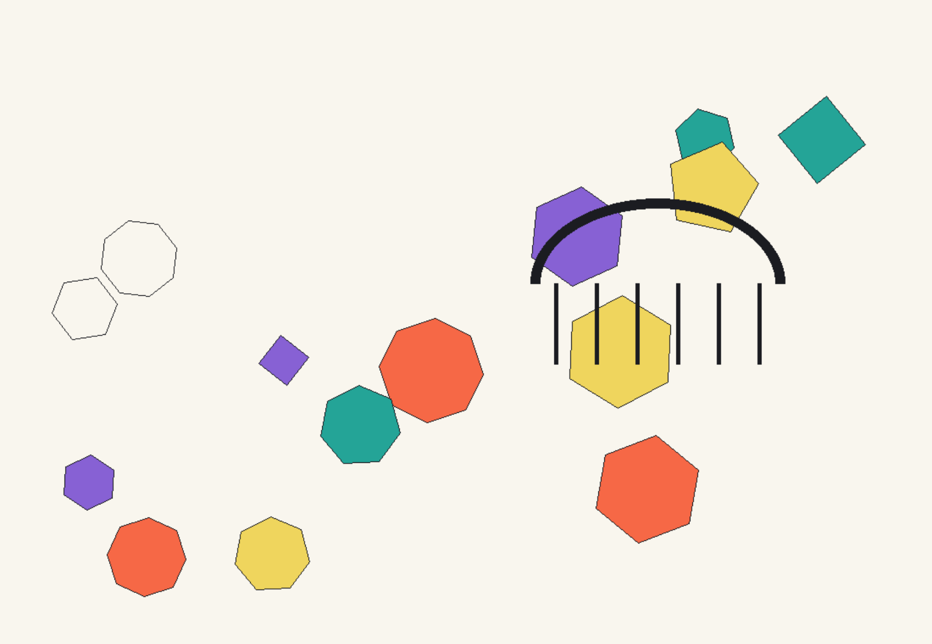

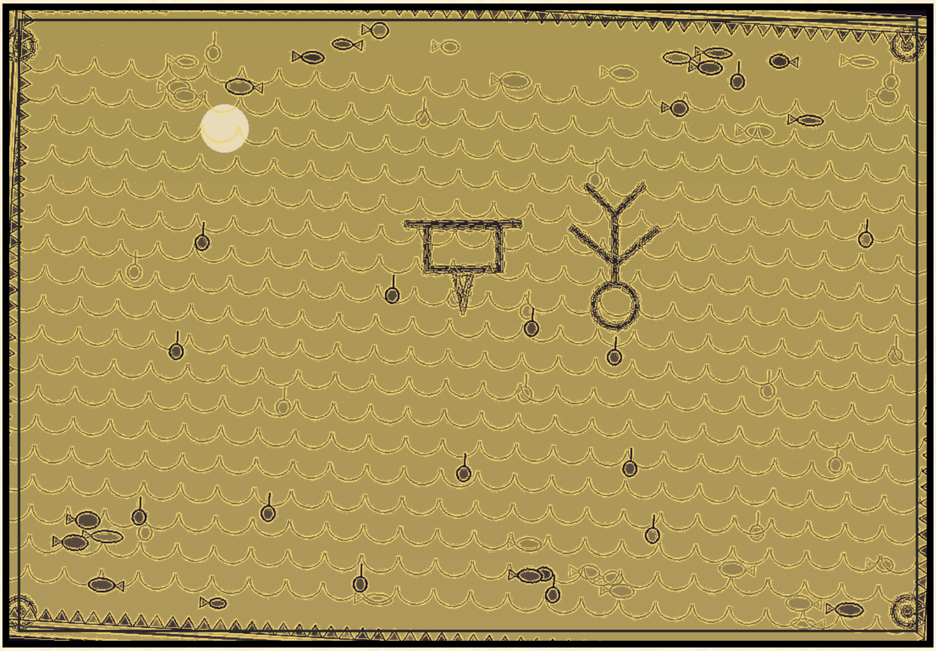

चित्र 22

आ सैह भेल — छठिहारी दिन बच्चा मरि गेल। जेना आएल छल, तहिना चुपचाप चलि गेल — विधानक बहीक ओहि एक्कहि पाँतिकेँ पूरा करैत, जे करुणा जोड़ने छल आ नियति काटि देने छल।

उजैनी ओहि दिन कानल — पूरा गाम। मुदा सभसँ अचरज ई — मोतीदाइक आँखि ओहि दिन सुखाएल छल। लोक बुझलक, दुखसँ पथरा गेलीह। साँच किछु आर छल: जकरा जिनगी भरि खाली कोराक दुख छल, से आब भरल कोराक स्मृति नेने छलि। दुनू दुख थिक — मुदा दुनू एक नहि।

अध्याय १२ : भगता

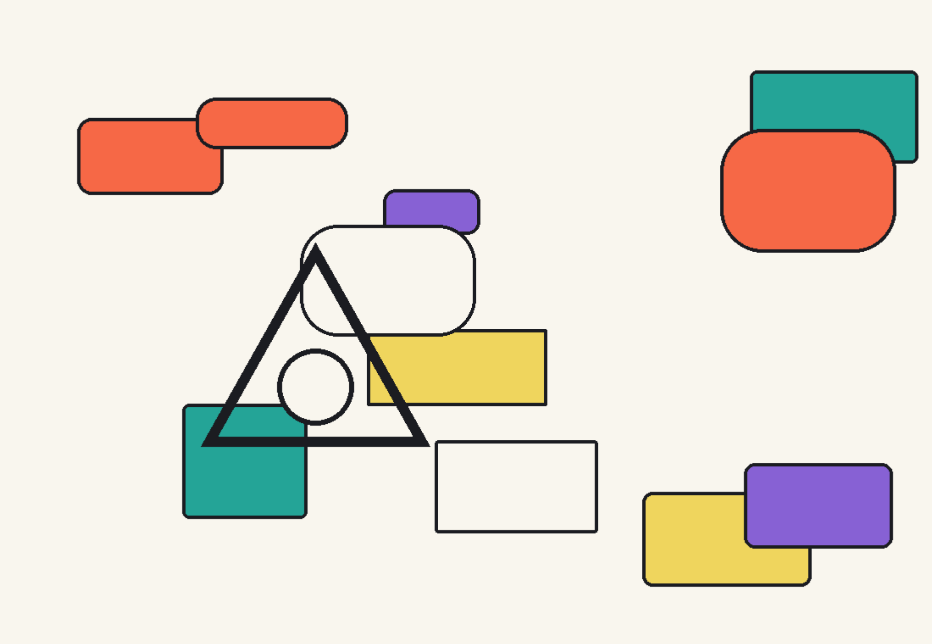

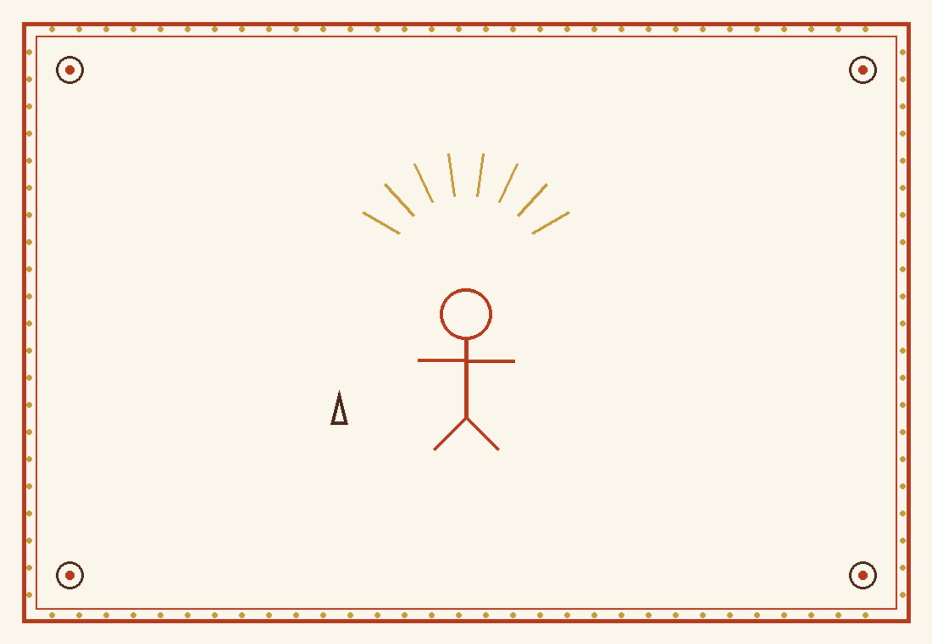

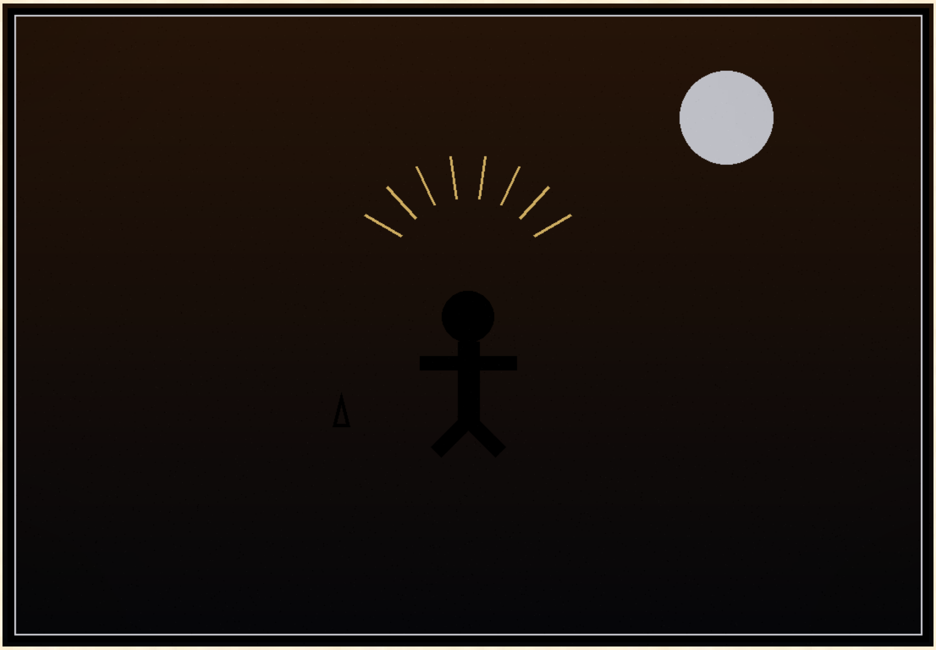

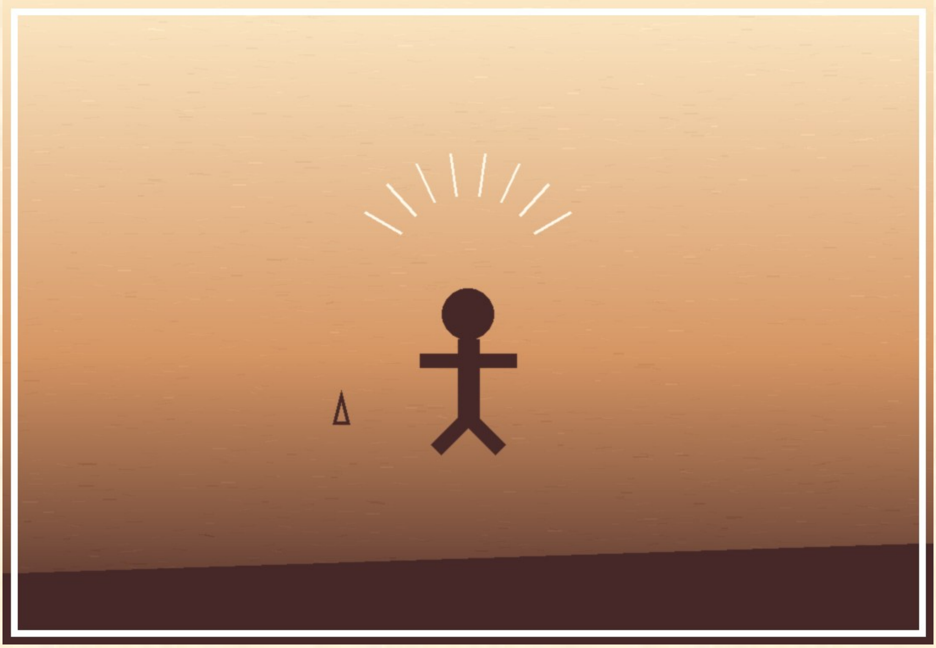

चित्र 23

बाँझ होएबाक दुख मुदा खतम भेलन्हि। ई वाक्य सुनबामे विचित्र लगैत अछि — बच्चा त' रहल नहि, दुख कोना खतम भेल? मुदा एहीमे एहि गाथाक गहींर मर्म अछि।

मोतीदाइकेँ सन्तान-सुख नहि लिखल छल — लिखल छल कलंक। आ ओ कलंक छह दिनक मातृत्व सदा लेल धो देलक। आब ओ 'बाँझ मोतीदाइ' नहि छलीह — ओ माए छलीह, जकर बच्चा नहि रहल। गामक जीह लेल ई अन्तर सूक्ष्म हएत; करेज लेल ई अन्तर आकाश-पाताल छल।

आ मोतीदाइ? ओ फेर गहमर घुरलीह — मुदा आब खाली दीप-धूप लेल नहि। गहिल माताक भगता ओ खेलाए लगलीह — देवी हुनक देहमे उतरथि, आ गामक दुखिया सभ हुनकहि लग अपन-अपन खाली कोरा, अपन-अपन कुबोलक शिकाइत, अपन-अपन नोर लऽ कऽ आबए।

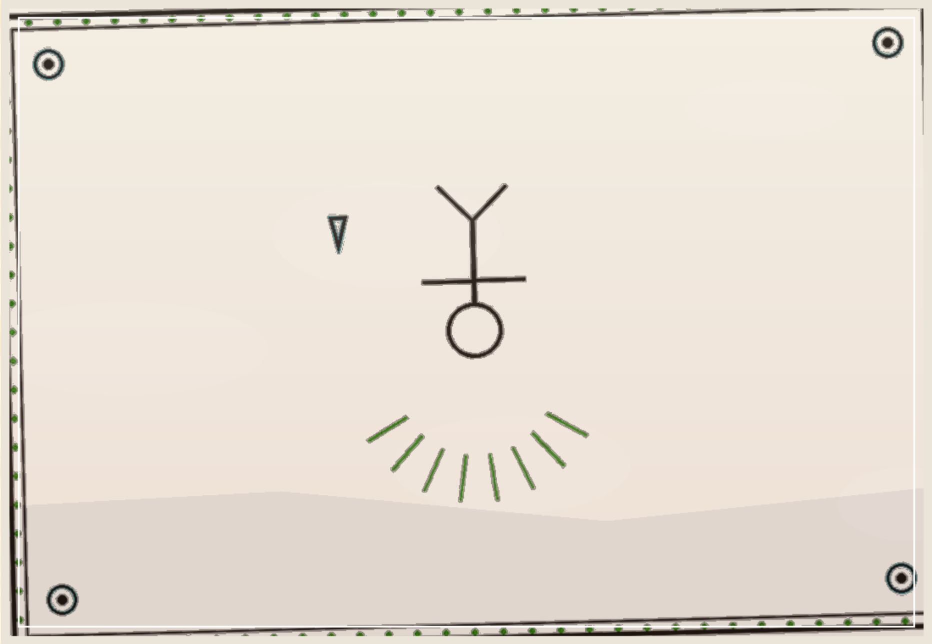

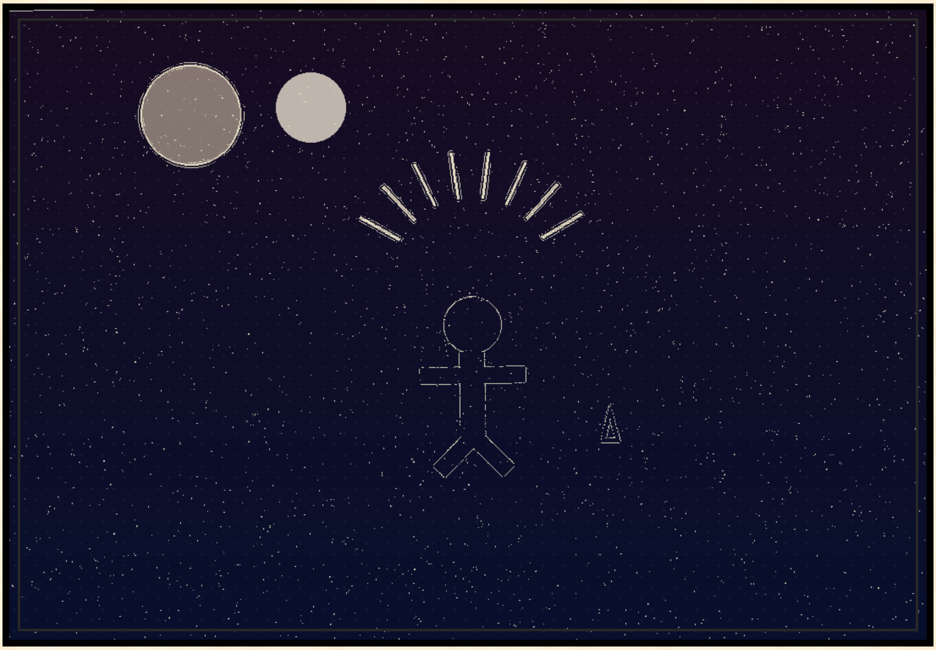

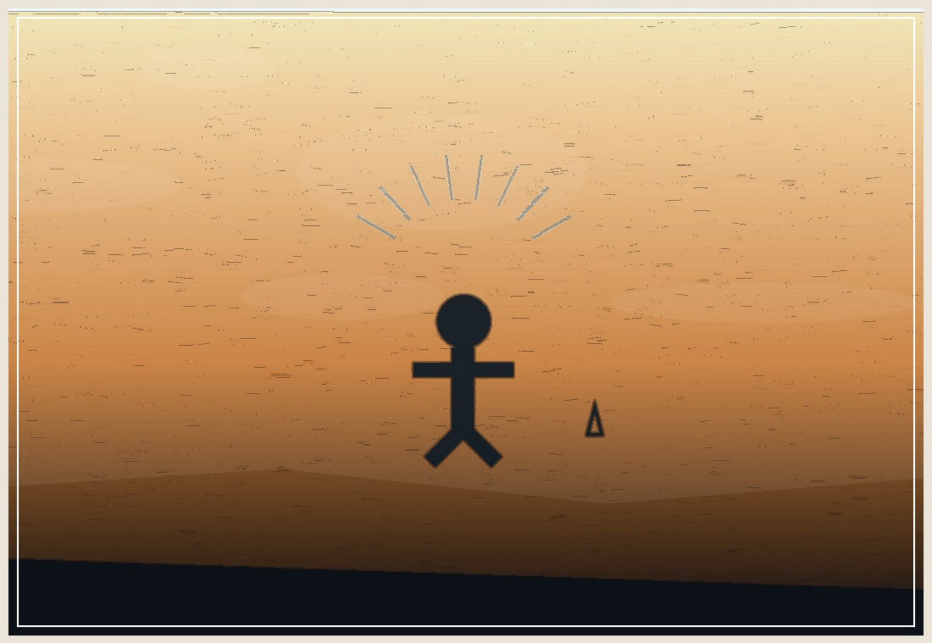

चित्र 24

जे स्त्री अपने उत्तर लेल पीड़ी खोदने छलि, से आब दोसराक उत्तर बनि गेलि। दुख जखन भक्तिमे ढलि जाइत अछि, तखन ओ सेवा बनि जाइत अछि — मोतीदाइ एकर जीवित गहमर छलीह।

उजैनीमे आइयो गहिल माताक पूजा होइत अछि, आ पूजामे मोतीदाइक नाम अबैत अछि। लोक कहैत अछि — माताक सभसँ पैघ भगतिन, जे देवीकेँ दू बेर इन्द्रक दरबार पठओलनि। आ जे केओ ओहि गहमरपर खाली कोराक दुख लऽ कऽ अबैत अछि, तकरा बूढ़ि-पुरनियाँ मोतीदाइक खिस्सा सुनबैत छथिन्ह — काननिहारकेँ ई बुझेबा लेल जे विधान जे नहि दैत अछि, से भक्ति दोसर रूपमे दऽ जाइत अछि। छह दिनक बेटा गेल — मुदा माए अमर भऽ गेलीह।

समाप्त

VIDEHA: विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका: **ISSN 2229-547X:** www.videha.co.in